

पाठ	चिपय		पृष्ठ
	वर्षा श्रीर शस्त्र ऋतु का वर्णन (रामायण से)		१३४
३= पुष्पवाटिका में जानकीजी श्रीर रघुनाथजी का			
	समागम (रामायण से)	•••	१३=
	(१) सीताजी का खयंवर (रामायण से )	•••	६४३
४०	(२) सीताजी का स्वयंवर (रामायण से )		१४७
<b>ઝ</b> ફ	चिशष्टर्जी का भरतजी की उपदेश (रामायण से)		१४१
ષ્ટર	. भरतजी की भ्रातृभक्ति ( राभायण से )	•••	६४४
४३ कुराडलिया याया दीनद्याल गिरि एत ( भ्रम्योक्ति-			
	कल्पट्टम से )	•••	१४≈
88	क्षेत्रियं प्रतापनारायण रहत ( प्रेमपुष्पावली से )	•••	१६१
४५ श्रीमती राजराजेभ्यरी विक्रोरिया की स्तुति ( मिध			
	प्रतापनारायण कृत )		१६४



# हिंदी-शिक्षावली

## पाँचवाँ भाग

#### पाठ १-- निस्पृद्दता अर्थात् निर्लोभ

इंगलैंड देश के ट्यू क आफ मंटेंग्यू आत्यंत दयालु श्रीर दीन-प्रतिपालक थे। उनकी यह रीति थी कि निराध्य श्रीर दीन मनुष्यों के दुख दूर करने के लिए भेस पदल कर फिरा करते थे। एक दिन वह पड़े तड़के अनायों की मंडली में पहुँच गये श्रीर एक मुद्रिया की सामने देख कर उन्होंने कहा कि आज कल तो पड़ा कुसमय है, तृ कैसे अपना निवाह करती है, श्रीर जी तुमें कुछ आवस्यकता हो तो हम तेरी सहायता करें। यह वोली कि इंस्टर की रूपा से में स्वाधीन हूँ श्रीर मुके किसी वस्तु की कमी नहीं है। जी दीन देख कर कुछ देने की इन्हों हो तो इस घर में एक अनाथ स्त्री रहती है, उसकी सहायता कीजिए. यह भूव के मारे मरी जाती है।

चुिंद्रपा की पात सुनते ही ब्यूक उस घर में घुस गये झीर उस झनाथ उपम-र्याहत खी को कुछ पन देकर किर उसी चुिंद्रपा के पास झाकर कहने लगे कि तेरे झार किसी पड़ेासी को कुछ कष्ट हो तो पतला। चुिंद्रपा से दुवाय पूछने से उनका प्रयोजन कुछ देने का था, कि जय इससे पूछने कि झीर



( % )

धी. इस कारण ज्ञान की लपट पेसी बढ़ी कि कितने ही लोग धर में पाहर न निकल सके। अड़ीस पड़ीस वालों ने घड़े कह श्चीर किटनाइयों में कितनों की पाहर निकाला, तो भी यहुतेरें भीतर ही रह नये। एक निर्धन रही के कई एक लड़के थे। जय घड़ पड़ीसियों की सहायका की अपने यच्चों की। सेवार घर से पाहर हुई तो यह सेवा कर कि आज ईश्वर ने मुक्ते और मेरी संतान की पचाया, पड़ीसियों की पड़ाई और उनका धन्यवाद करने लगी और अपने अन्येक लड़के या नाम ले से कर प्यार करने लगी। अत में जब उसने देखा कि सबसे होटा लड़का नहीं आया, धर के भीतर ही रह नया, पह उसके मोह में प्रवहा कर पानल सी हो गई, यही नव कि आण-विकाश की घंका होड़ करने घर में पुस गई, परन्तु ध्यक्तरट में यह न जान पड़ा कि यह विस्ता घर हैं।

पक दिन श्राम स्वी। उस समय हवा पड़े चेन से चस रही

भागी रहा पर पर पर पर है। भागी रहा है कि स्वार क्षार की रहा है की र सेतान की प्रान्त न्या समभ कर कार्नद में इस गई। जिस प्रकार घर के भीतर गई भीर पहीं में उड़के की ठाई, यह सम प्रान्त पात के सीगों में कहने छती। इसके पीड़े जब उसने उड़ा कर उड़के का मुद्दै जूमा तें। जान पड़ा कि यह उड़का किसी दुसरी रही की उसी की उस के पास रहती थी दीन ज्ञान की भाग में उड़के की मुद्दे रही की उसी की घर के पास रहती थी दीन ज्ञान की भाग में उड़के की पर में भीड़ कर मान निकाली थी।

क्सरी क्यों का है जो उसी के घर के पास रहती थी और ज्ञान कुसरी क्यों का है जो उसी के घर के पास रहती थी और ज्ञान के अब यह पित अपने टड़के को छाने के लिय घर के सीतर यहीं, आम की तपट रहनी पढ़ गई थी कि खारों ज्ञार शुर्का के फैल जाने से अपेश हो गया। कुछ देख न पड़ता था. इस कारण यह घरमा कर जिर हुसरे के घर में घुस गई। जब कसे जान पड़ा कि यह भी हुसरे का घर है कव ना होक से किसी की दुरा बजेश है तो अयदय अगनी स्वयस्था वर्णन करेगी। युद्धिय वेशी महाराज! मेरा यक बीर महा मानुस पहोसी बड़ा दुस्ती है। उप के कहा तेरे समान निभोती धार सुग्रील की मनी तक मेंने नहीं देशी, जो तू मन में दुस माने ते में तेरा युक्ताल सुना चाहना है। यह यात मुन कर सुद्धिय वोशी तमें दुस्ती नहीं भीर न किसी का कुछ पराती हैं, अभी तो मेरी गाँउ में पर्यह कराये हैं।

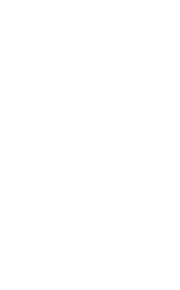
यह बात सुनकर रूपक बहुत ही मसल मीर विस्मात हुए भीर मन में बसकी सुग्रीवला मीर उदारता की बहार करने छो। फिर बससे कहा जो रसमें रुपक क्षेत्र म हो तो हम मुक्ते इन्द्र करने हैं। युद्धिया बोक्ती जो खाव खाता करने हैं. इसमें मुक्ते सिग्रीय क्षेत्र तो मही है वच्नु मेरे विचार में लेना बड़ा निद्देन कर्म हैं। युद्धिया बीच्छी उदारता हों कर पर बहुत हो प्रसंघ हुए क्षीर बसी समय बीच सोने के सिक्के निकाल उससे हाथ में देकर बोले यह तो गुक्ते मक्क्य क्षेत्र को भीर जी। न लोगी तो मुक्ते बड़ा क्षेत्र होगा। उन्त की दयानुता श्रीर दानशीलना देख कर वृद्धिया व्यक्ति सी रह गई आप ब्रांचिन में श्रीन् मार कर बोली महाराज: खिरक क्या कर खाय सरीखे सन्पुकर बहुत कम देखने म आपे हैं।

#### पाठ २—अपनी संतान पर माता का स्तेह

ईशलड दश की राजधानी लन्दन नगर में दाहर नामी यह स्थान हैं। वहीं बहुन से घर श्रायक में मिल जुलें एक पीते में बने हुए हैं। वह किसी के निज का निवासस्थान नहार न जी लाग आधा देने हें वहीं बनमें रहा करते हैं। श्रकस्थान् यहां पक दिन श्राम लगी। उस समय एवा पड़े येग से चल रही थी, इस कारण श्राम की लघट ऐसी पड़ो कि कितने ही लोग श्रर से वाहर न निकल नके। श्रदेश पड़ोस वालों ने पड़े कष्ट श्रीर कितने हों लें के पड़े से पहें से कितने हों की पाहर निकाला, ते। भी यहुतरे भीतर ही रह गये। एक नियंन खीं के कर्द एक लड़के थे। जय वह पड़ोसियों की सहायता से अपने यह वों को तिकर घर से वाहर हुई तो यह सेवाब कर कि श्राम देश्वर उनका धरणाद संनान की वचाया, पड़ोसियों की पड़ाई श्रीर उनका धरणाद करने लगी श्रीर अपने प्रत्येक लड़के का नाम ले ले कर प्यार करने लगी श्रीर अपने प्रत्येक लड़के का नाम ले ले कर प्यार करने लगी। श्रंत में जय उसने देखा कि सबसे ही हा लक्ष नहीं श्राम, घर के भीतर ही रह गया, वह उसके भीह में वबड़ा कर पागल सी हो गई, यहां तक कि श्राण-विनाश की श्रंका होड़ जलते घर में घुस गई, परन्तु घयड़ाहट में यह ज जान पड़ा कि यह किसका घर हैं।

थोड़ी देर पींचे एक लड़का लेकर वाहर निकल शार्र श्रीर संतान की प्राण-रज्ञा समम्म कर श्रानंद में दूव गर्र। जिस प्रकार घर के भीतर गर्द श्रीर वहाँ से लड़के की लाई, यह सब वात पास के लोगों से कहने लगी। इसके पींचे जब उसने उठा कर लड़के का मुँह चूमा तो जान पड़ा कि वह लड़का किसी दूसरी रही का है जो उसी के घर के पास रहती थी श्रीर श्राम के भय से लड़के का घर में खेड़ कर माग निकली थी।

जय वह फिर अपने लड़के के लाने के लिए घर के मीतर चर्ता, आग की लपट १तनी यह गई थी कि चारों ओर धुआं के फैल जाने से अँभेरा हो गया। कुछ देख न पड़ता था, इस कारण घह घयरा कर फिर टूसरे के घर में घुस गई। जब उसे जान पड़ा कि यह भी टूसरे का घर है तब तो शोक से



के सारे मनुष्य स्याकुल हो गये श्लीर घंट्रक लेकर मगर की मारने के लिए निशाना लगाने लगेः परन्तु यह किसी से न यन पड़ा कि उसकी सहायता के लिए जहाज़ से नीचे इतरे।

जहात से कितनी ही गोलियों सोगों ने चलाई: पर उनमें से भगर के एक भी न लगी। भगर, वेंकनर की निगलने ही की या कि उसका चेंटा. जो पड़ा पितृभक्त था, यह देख कर कि झब पिता का प्राण किसी प्रकार नहीं पचता, पक्ष नंगी तलवार से कर समुद्र में कृद पड़ा और चेंग से भगर के पास पहुँच कर उसने उसके पेंट में तलवार घुसेड़ दी। तब तो भगर खिसिया कर उसी के पकड़ने की देहा, परन्तु यह यहा चतुर पैरनेवाला था. पकड़ाई न दिया।

जय इतना श्रवकाश मिला तय श्रहाज्ञवालों ने रस्तियाँ हाल हों और पिता पुत्र देनों ने एक २ रस्सों के प्रकृत तिया, तय उन्होंने ऊपर से खींचा और इन दोनों के प्रारीर जल से कुछ ऊपर को उठे। उस समय उनकी प्राण-रज्ञा होते देख सब को परम श्रानंद हुआ, परन्तु वह कराल जन्तु मुँह फाड़ कर ऊपर को उद्दला और वेकनर के त्र का नामी तक शरीर निगल गया और अस्पर पैने दोतों से कमर तक निगले हुए शरीर के। काट कर जल में गिर पड़ा; लड़के के शरोर का कटा हुआ ऊपर का भाग रस्सी के संग भूलने लगा।

यह देख कर सारे मनुष्य शोक में विकल होकर हाहाकार करने लगे शीर बेकनर जहाज़ पर से पुत्र की ऐसी देशा देख कर शोक से मुर्दित हो गया। उस समय पास वाले जो उसे पकड़ न रखते तो पह अवस्य सनुद में कुद पड़ता श्रीर प्राप्त तज देता। उसका पुत्र जब तक जीता रहा, रकाकी लगाकर पिता की शोर देख देख शानंद से यह अनुमान करने लगा



है। वीमारियों से पवाव होता है और शरीर की आरोग्यता में दिन दिन इप्रति होती जाती है। सैंकडों यीवा धरती जो पहिले यंजर पड़ी थी, अब उसमें खेती यारी होने लगी है। हिन्दस्तान की मनुष्य-संख्या अय इतनी यदती जाती है कि जङ्गल न काटे आर्य श्रीर नई घरती खेती के योग्य न यनाई जाय ते। संपूर्ण निवासियों का माजन मिलना कठिन ही जाय। ठीर ठीर निर्देशों से नहरें निकासी गई हैं, जिनसे खेती का बद्दत कुछ लाभ पहुँचता है। शक्त, तार, रेल, श्रॅंगरेज़ॉं ही ने चलाये हैं जिनके लाभ प्रकट है। जिन समाचारों के पहुँचाने में श्रधिक व्यय होता श्रीर यहत समय लगता था श्रीर जिनमें प्राची की बाधा भी थी अब घंटों में बहुत ही सुगमता से धाड़े स्वय में सहस्रो कोस निस्सेदेह पहुंच सकते हैं। जिन स्थानों को पहिले कोई स्वप्त में भी नहीं देख सकता था. अय वहाँ रेल द्वारा वेखटके थोड़े समय में पहुंच सकते हैं। व्योपार की भी रेस श्रीर नार से इतनी उन्नति हुई जो फहने में नहीं आती। देशी, वालहत्या । दुखनगङ्गरी । धार सनो होने की रीति जिनके स्मरणमात्र से रुपटे खड़े हो जाते ह सर्वार धैंगरेशी के उद्योग से वंद होगई। एर साल सहस्रो बच्चे शोतला के भेंट होते थे अब टीका के प्रचलित होने से सृत्यु के ब्राम दाने से पच जाते हैं।

सबसे यड़ा लाभ शिक्षा के हिन्दुस्तानिये का इस राज्य में पहुंचा है। हिन्दुस्ताना जा मुखन के ध्रधकार में पढ़े ये ध्रव विद्यास्त्रों सुप के प्रकार में उनके हृदय का ध्रपकार दूर हो गया। सकार ने जो जो उपाय उनको उन्नति के लिए किये हैं श्रीर जो जो लाभ उनसे पहुंचे के धार पहुंचे रहे हैं उन उपकारों से उन्नार होना ध्रसमय है

पाठ ४--- झहचक

बहुत से तारे जी रात में हमकी दिखाई देते हैं स्थिर हैं। बार्थातु श्रवता स्थान नहीं बदलते, वरन्तु कुछ वेसे मी हैं जो नियत स्थान पर नहीं रहते। जो भ्रयना स्थान बदला करते हैं। ब्रह कहराते हैं। ब्रह सुर्य की बद्दिणा करने हैं। ब्रहमार्ग मुलाकार नहीं है, उसकी धारुति श्रंहाकार है।

बुध जिसकी थैंगरेशी में मकेरी कहते हैं सबसे हैं।टा है। नुधियी इससे सबह गुणा यही है। तीन महीने में सूर्य है चारों क्रार पक बार घृम आता है। यह मुर्थ के बहुत पास

है। मूर्य से इमका अंतर साढ़े तीन कराड़ भील है।

इसके अनन्तर शुक्र है जिसके। खैंगरेज़ी में बीतन कहते हैं। यह होल होल में ग्रांथवी के बराबर है बीर इसकी परि क्रमा में साढ़े साल महीन लगते हैं। सूर्य से इसका श्रवर हा करोड सत्तर लाल मील है। सांभ की यह पश्चिम में बीर सवा पूर्व म दिखाई देन। है। जैसे गुक्त हमके। देख पहना है र्वम ही शक्त वालों का हमारी पाथवी समकत हुए तारे के समान जान पहनी है।

गुक के पीरे पृथियों है। इसकी प्रदीनणा का समय एक मारु है। यह मुख्य माना कराइ तीम लाख माल दूर है। चन्द्रमा इसक चारा धार एक महीन म प्रम बाता है इसलिए

बसका बयबह कहलाता है पुरियों के समस्तर सवल है जिसके। धैगरको संमार्थ कहते हे। अञ्चल संशिवकी चार गता बढ़ी है। इसकी प्रद शिला म दा बाग जगत है। यह सुध स जादह दशह मील यर हे इसके दो अपन्न है हरशीन से देखन से इसके कृष् भाग लाल, कुछ हरे श्चार कुछ सफ़ेद दिखार देते हैं। स्पोतिपी पेसा श्रतुमान करते हैं कि जा भाग लाल है वह स्पल हैं, जी हरा है वह जल है श्चार जा सफ़ेद हैं वह हफ़्ते हैं।

मञ्जल के अनन्तर पहुत के होटे होटे प्रह है जिनमें से मुख्य वेस्सा, चुनो, सिरोज़ और पटास है। ऐसे दे। सो से अधिक गोते देखे गये हैं और हर साट बनकी संख्या पट्ठी ही जाती है।

द् न होटे होटे नोर्टों के पीड़े एक सब्से वड़ा नोहा है जिसको दम प्रद्तित और सँगरेज जुपिटर कहते हैं। यह हमारी पृथिवी से तेरह सा गुना वड़ा है। यह ग्रेप प्रह मिला कर रक्षे आर्य तो भी इसके बराबर नहीं हो सकते। यह बारह वर्ष में स्पर्थ के चारों और एक बार घूम आता है। स्व से इसका अन्तर अड़तालीस करोड़ साठलाख मील है। इसके चार उपप्रह हैं।

बृह्स्पति के पाँदे शनिश्वर है। इसकी ईंगरेज़ी में सैटर्न कहते हैं। यह पृथिवी से साट्टे सात की गुना यड़ा है और सूर्य की प्रवृद्धिए। में तीस परम स्मता है। इसी से इसके संस्कृत में शनिश्वर अर्थात पीरे पीरे चसने वासा कहते हैं। इसके आठ उपप्रह हैं।

शनिर्वर के पीड़े यूरेनस और नेपच्यून दे। ब्रह और देखें गये हैं। यूरेनस पिहले पहिल सन् १७=१ १० में देखा गया। यह हमारी पृथिवी से चीहत्तर गुरा बड़ा है। और इसकी परिकमा में चारासी बरस लगते हैं। इसकी दूरी सूर्य से पक अरव पवहत्तर करोड़ मीट है। इसके चार उपब्रह हैं। नेपट्यून सन् १८८६ रे॰ में देखा गया। यह यूरिन से मी यहा है। इसकी महीनाचा १६४ यरम में पूरी होती है। स्य से नेपट्यून का जंनर पृथियी की अपेटा तीम गुणा है। इसके एक ही बगमद है।

दस देन वाले बन्द्रमा को भी एक प्रद मानते हैं, पर अब यह सिन्द्र हो गया है कि व्यन्द्रमा मृग्यं की परिक्रमा नहीं करता है, केशक पृथियों के यागे श्रेम पूमता है। इसी के दसके बन्धद मानते हैं। हिन्दू में प्रद कीर भी मानते हैं जिनको राहु सीर केंद्र कहते हैं। यह किसी पिशेन गोले के नाम नहीं है, जब कुत्त पक हुसरे को कारते हैं उनका दो स्थानों पर सैमा होता है। जब नुमकी विदित्त हुमा कि पृथियों मुद्दे की परि-क्रमा करनी है श्रीर बन्द्रमा पुरिन्यों के याना सेना प्रमृता है, त्रय मेंती पून पक हुमरे की दा स्थाना पर कारेगे। इसी देवारे स्थानों के नाम राह्न थीता हुन है

7'8 - 471

यो तो इत्यर न पान का जिल्ला पाना का बनाया है तह समुख्य ने आपनी चनुराह साम्य पाना दावा ने तिकाल के जिनसा नार्यित सामुख्या जान पानाचार कर करने आदि का नो धनक पूर्ण की इत्या पिता साम्यान साम्या का निवास करना का नी कुलाया का जब पहाल सामान करने करने का नी पाना चनित्र की कृट का दूरी पर कह यह पाना सामान सामान सामान सामान सामान करने की सामान करने की सामान सामा

पटेट हुँट से वीस हुँट बढ़ सकता है पटना तीस हुँट से प्रप्यिक नहां पढ़न पाता। बाद राकन सं उपल बढ़ ताती है बीर खातन याल सुरामता सं फळ बाद सकत है। उसकी डालियां रुम्बा श्रीर पतला होती हैं श्रीर तने (पेड़ी) से जेड़ी जोड़ी श्रामने सामने निकटती हैं श्रीर हरे पत्तों से सदा दकी रहती हैं। पत्तों के निकास के स्थान से सफेद फुरू निकटते हैं श्रीर इनके मुरका जाने पर दे। या तीन दिन में फल निकल आते हैं। पहाड़ों के डालू स्थानों पर, जहां कि हवा धोमी चलती है, धरती पथरीली और सुखी होती है और पानी नहीं हहरता, यह पौधा पनपता है। उपजाऊ धरती में इसमें वह श्रीर बहुत फल लगते हैं। नीची चीरस जगहों में बड़े पेड़ों की छांह में इसके। लगाते हैं जिसमें स्यंय की जलती हुई किरणों से फल मुलस न जायँ। कहवा का पीघा दे। वरस से पहिते नहीं फलता, देा बरस में पूरा फलने लगता है, श्रीर फिर बीस बरस तक निरन्तर फल देता रहता है। रात भर में फूल खिल जाते हैं और जब सबेरे पेड़ लगाने वाला उठता है ता देखता है मानें पेड़ों पर वर्फ जम गई हैं। फूल बहुत जल्द मुरमा कर गिर पड़ते हैं। ऐसा बदुत कम होता है कि फूट दो दिन से अधिक पेड़ में छगे रहें। अब फल फलने लगता है श्रीर ज्याँ ज्यों पक्रने पर श्राता है उसकी हाली बढ़ती जाती है।

उसके भीतर दो शंडे के झाकार के दाने या वीज मटर के वारत पाले रह के चिप्तियों गृदे में डिपे रहते हैं। वीज मटर के वारावर पीले रह के चिप्तियों गृदे में डिपे रहते हैं। वीज पाहर की श्रार से गायल में मिले रहते हैं चपटे होते हैं और उनके वीच में पक गहरी थारी सी वनी रहती हैं। वीजों के ऊपर एक प्रकार की मिली होती हैं। कहवा की तीन फ़सलें होती हैं. उनमें सबसे मुख्य वह हैं जिसकी लुनाई मई के महीने में होती हैं। पक जाने पर यदि फल न तोड़ जिये जायें तो तुरन्त पिर पड़ते हैं।

श्चरव में फल ताड़ने वाले पेड़ों के नीचे धरती पर काड़ा



तामा से कोई हानि है। आन, दान, ईस्टर की यंदना हम लोगों का परम धर्म है। जिस समय और जिस पदाने से किये आये इनसे कभी हानि नहीं हो सकती। पर लोगों के निर्चय ध्रीर विस्तास की पात थ्रीर हैं थ्रीर शास्त्र की पात थ्रीर हैं। मुखीं की पात हम नहीं कहते। पर जिसने संस्टत की खगेल हिया पड़ों हैं पह जानता है कि चन्द्रमहण पृथियों की द्याम में चंद्रमा के प्रयेश परने और स्थंपहण पृथियों की द्याम में चंद्रमा के प्रयेश परने और स्थंपहण पृथियों और स्थं के ध्रीय में चन्द्रमा के अप जा जाने से स्थाप हैं। यह बात अगरेश स्थय हैं। यह बात अगरेश स्थय हैं। यह बात अगरेश स्थय हैं। हैं। हो विद्याप हमारे हें। हो चन्द्रमा की चन्द्रमा की चन्द्रमा की चन्द्रमा की चन्द्रमा की स्थाप स्थाप हमारे हैं। स्थाप हमारे ही। स्थाप्ता स्थाप स्थाप हमाने ही। सामय हीत ही का बता हते हैं। स्थाप्ता या हिंसी गति होती ती हमस्य हीत हीत संसे हैं। स्थापना हमी

हमारे देशों से मचित लगे तिपरा ये ए संबत्धाः हमारे देशों से मचित लगे तिपरा रं सीर सँगरेसी खगे लगे लिया से मतो में पृथियी, सूर्य द्वार चन्द्रमा की गति में सेवल कता में द र्ष कि रिन्दू पृथियी की नियर मानते हैं, सीर सँगरेसी से मत में पूर्व रियर हैं। चन्द्रमा देनों मतों में पृथियी की चारों के मत में पूर्व रियर हैं। चन्द्रमा देनों मतों में पृथियी के चारों के राम पृथ्मता है। सूर्य क्वतः प्रभाग है जिसका सर्थ यह दें कि दीपक की भांति सावसे साव सम्मता है। चन्द्रमा की ज्योति सूर्य की ल्योति हैं। को भाग सूर्य के सामने रहता है उसमें बक्ताता देख पहता है है। को भाग सूर्य के सामने रहता है उसमें काम का स्वार हो। पृथियी में मनास नहीं है। कैसे दीपक के साम के हैं। पृथियी में मनास नहीं है। कैसे दीपक के साम करता हुआ हम ल्या है। सब चन्द्रमा पृथियी की परिकास बरता हुआ हम ल्या में पह साम है।

कि बन्द्रमा तो हर महीने पृथियों के बारों सार पूमता है फिर हर महीने महण क्यों नहीं लगता । हरका कारण समझन कुछ पटिन है। हरस समय दुमको हरना ही बनाया जात है कि कभी बन्द्रमा छाया के ऊपर और कभी नीये से निकल जाना है। पेसा ही मश मृर्थमहण के विषय में भी है। सकता है व्योंकि हर जमासक को बन्द्रमा हीन एयंद्र कहा होते हैं। इसका मी उत्तर यहाँ है कि रान में हमारे और सुप्ये के बीच में बन्द्रमा हर महीने नहीं लाता, कभी जपर और कभी नीये रहना है।

#### पाठ =--- वात-स्नेह

सन् १४=४ रं० मे पुनैगाल देश के लिसवन नगर से कई कहा है गोधा को चार्च थे। उसमें से एक में सब मिला कर लगनन गारह में। मनुष्य थे। उहांत अधनेका नक निर्वास पर्देखां। यहां में थोड़ी दूर पर समुद्र के नीचे एक बहान थी जहां माजांडों की क्यावधानों से जहात देशर गया। गई में यहां गारी देह को नमें से पाना यह बेग से मौतर जाने लगा और जहाज के बनने की खाना न रहा।

जराज के प्रमान के आगा न रहा।

क्षान ने जराज का बयाना समस्मय देख कर द्वांगा समुद्र
मैं द्वांनी और योड़े से भाजन के पराये लेकर उद्यास मनुष्यों
के साथ उनमें सवार हो लिया। और भी पहेंगेर मनुष्यों
के साथ उनमें काला हो। परन्तु जर भीसी मनुष्यों ने उन्हों नमी
नत्यारों के यह से राजा, प्योक्ति अधिक योभक्त के बारण
इंग्ली के दूब आते का द्वां था। कमान और उसके समी
इंग्ली के दूब आते का दूब था। कमान और उसके समी
इंग्ली कर यह सो से सत्य दिये और श्रेष मता के साथ
समुद्र में इंच गाँव।

जहाज़ पर से डोंनी पर उतरते समय फतान कैयास लेना मूल गया, इसलिए दिशा का चोघ न हो सका क्षीर विना समक्षे चुके नाव सेकर चलना पड़ा। ये घषराहट में भीटा पानी भी जहाज़ से उतारना मूल गये क्षीर प्यास के मारे नहरने लगे, तो भी डोंगी खेंने ही चले गये।

कप्तान पहते से वीमार होने के कारण चार ही पाँच दिन में मर गया और उसके मर जाने से पड़ी हरूचरू मच गई। सवहीं अपने की मुखिया पनाने और अपनी आसातुसार औरों की चराने की चेश फरने रुगे- पर दुनरे की आहा पर चरना किसी की नहीं भाना था। अंत में सबने एका करके छपन में से पर आनकार पूर्व की अपना कप्तान पनाया और उसी की आकानुमार चरना क्षतीकार किया।

कुछ दिन धीन उसने देखा कि याने यीने का सामान इनला हा क्या है कि रान पटन के आगी ने खतेगा तब उसने सामान दो कि एनती क्या हुई सामामी से तम सावण खांधक पटन ने के उसने सामान दो कि एनती क्या हुई सामामी से तम सावण खांधक पटन ने कि एम के प्रेम का मान चिद्रिकों के लोग जांच के राजा के को पान हो में उसकी सामा के विद्रुप के लोग पटन के या जांच को पटन से सामा है कि हुई साधक पटन ने के या पटना के पटन कर मान चार का या पटना के या के पटन मान के या पटना करना लगा सामान करना या पटना के या पटना के या पटना के या पटना के या पटना करना लगा या पटना के य

'तन पार मन्त्र्यों के नाम की 'चाँहर्यों निजनी उनमें से सीन न पर समना 'क हमारा क्षत्र समय का सपा है होता



करने दो।" जेठे भाई की यह सब याते सुन कर द्वेटि भाई ने कहा "आप अपने मन में यह निश्चय जान लीजिए कि में अपनी आंखों के सामने आपको प्राण न त्याग करने हुँगा।" ऐसा कह घुटने टेक, जेठे भाई के चरण पकड़ फुट-फुट कर रोने लगा। तब जेठे भाई ने कहा "भेया! अब तुम मुक्ते होड़ दो, घर को जाओ। मेरे बच्चों, बहिनों और रखें का पालन-पोपण करो। भेया! हठ मत करो। मेरे बच्चों, बहिनों और खीं का पालन-पोपण करो। भेया! हठ मत करो। मेरा कहा माने। मुक्ते प्राण त्याग करने दो।"

इस तरह पर जेठे माई ने अपने छोटे भाई का यहुत भाँति सममाया पर. उसने अपना हठ न छोड़ाः निदान छोटे भाई का हठ उसे मानना ही पड़ा। इसके पींछे छोटा भाई समुद्र में फेक दिया गया। चह पैरना अच्छा जानता था। इस कारण तुरन्त नहीं इय गया। किन्तु कुछ काल तक पैरता रहा। पींछे मृत्यु के भय से नाव के पास आ। दिहने हाथ से उसका पत. बार पकड़ कर पैरने लगा। पर पद केवट ने तलवार से उसका हाथ काट डाला। तब फिर समृद्र में यह कर पैरने लगा आर कुछ देर पींछे आकर वायें हाथ से नाव का पतवार पकड़ा। तब फिर मझारों ने तलवार से दूसरा हाथ भी काट डाला। तिस पर भी यह अपनी दोनो वाहर की उपर उठाये वाब के यल नाव के पास-पास पैरता चला।

उसकी यह दशा देख सबका जी भर आया और सबीं की आखां से आसु निकल पड़ें सबीं ने पक है। कर यह कहा कि जो भाग्य में पड़ा है सो तो। किसी का टाला टलने का नहीं जीवत हैं कि पेसे आत्मनेही का प्राण् यवावें क्योंकि किसी ने आज तक पेसा आत्मनेही न देखा होगा। ऐसा कह कर उन्होंने भट्टट उसे डोगी पर चढ़ा लिया।



घोड़ी दूर आकर क्या देखते हैं कि एक मनुष्य पेड़ के क्रपर जिस डाल पर यैठा है उसी की काट रहा है। उसकी पहामुर्ख समस कर यहे आदर से नीचे वुलाया श्रीर कहा कि वलो, हम तुम्हारा विवाह राजा की लड़की के साथ करा दें परन्त घटां तुम मुँह से न घोलना । जे। कुछ पातचीत करनी हो संकेत-हारा करना। इस भाँति समभा-वृक्ता कर वे उसको सभा में ले गये। पंडितों ने उसका पड़ा श्रादर किया श्रीर कुँचे श्रासन पर पैटा कर राजकमारी से निवेदन किया कि ये बहस्पति के समान हमारे गुरु आएके साथ विवाह करने श्राये हैं परन्तु श्राजकल ये मीन बन धारण किये हैं। जो कुछ शास्त्रार्थं करना है। संकेत-द्वारा कीजिए। राजकमारी ने इस अर्थ से ईश्वर एक है पदा खेगुली उठाई। मुर्ख ने यह समम्मा कि राजकमारी एक अँगुली दिखा कर मेरी श्रीख फीडने की कहनी है उसने इस विचार से कि में तेरी दानों आखि फोड़ दाता. श्रवनी है। श्रमुलिया दिखलाई । परन्तु पंडितों ने उन दे। अंग्रालियों से ऐसे ऐसे अध निकाल कि राजक्रमारी की हार मान लेनी पड़ी। वानों का चिवाह हा गया। रात की जब दे। नौराजभवन में सो रहे थे. एक ऊंट चिल्ला उठा। राज-कमारी ने पूछा यह क्या नहाते. मुख जो किसी शब्द का भी गद्ध उद्यारण नदा कर सकता था वे। ल उटा कि 'उट' चिज्ञाता है। राजकुम।री ने फिर पृहा तय भी उस मुर्ख के में इ.सं. उष्टं शत्र साफ साफ न निकला बार बार उट. इट. वकता रहा तब ते। पंडितो का बुट राजकुमारी पर खुट गया श्रीर वह फूट-फूट कर राने लगी। फिर कोध में आकर उसने मुर्ख का घर से वाहर निकलवा दिया।

मृर्ख भी अपने मन में यडा टिज्ञिन हुआ। पहिले ना



हुर । मेडिये गाई। के पीड़े लगे ही रहे। अंत में सेवक ने अपने स्वामी से कहा कि आपने मेरे साथ यहुत उपकार किये हैं और में उनसे उन्नण होना चाहता हूँ। मेरी की और वर्षों की सुधि लेना। इतना कह ज्यादी सेवक ने कूदने का मन किया, स्वामी ने उसका हाथ पकड़ लिया पर यह कूद ही पड़ा, और मंडिये उसकी खा गये। इस मकार दें। ये हुए थोड़ों को अपने पड़ाव तक पहुँच जाने का समय मिल गया। इसरे दिन तड़ के स्वामी उस स्थान पर शाया जहाँ उसके प्रभुमक सेवक ने उसके जपर अपने पाए। निहाबर किये थे। उसने यह तमंचा पाया श्रीर देखा कि यफ़ रक्त से साह ही उसही ही। उस अमीर ने अपने सेवक की मंदि के स्मरण होतु वहाँ पर एक स्तम्म वनवा दिया।

### षाड ११—स्वामिभक्ति (२)

राजपूत सदा अपने देश की स्वतन्त्रता पर प्राण् निद्वावर करने पर उद्यत रहते और अपनी जाित के नाम पर सिंह की तरह लड़ते और मरते पे। रनकी घीरता की सैकड़ों कहावतें प्रसिद्ध हैं। पुरुषों का क्या कहना, रनकी खियों से भी यह काम पन पड़े हैं जो अप तक उनकी घीरता और प्रमुनिक की सुध दिलाते हैं। राजस्थान में राणा सौगा यहत दिनों तक मुसलमानों से उड़ता-निहता रहा। अपना राज्य क्यिर रखते के लिप यह यड़ी-यड़ी लड़ार्यों लड़ा और रस घीरता सेतल वार चलार कि अमी तक उसका नाम चला घाता है। रसके पींछ उक्का लड़का विक्रमाजीत उसकी नहीं पर घैडा, परन्तु वाप-वेटों में यड़ा ही अंतर था। अंत में सब प्रधान पुरुष और मन्त्री उसकी अयोग्यता से धयड़ा कर विगड़ पेठ और यन चीरसिंह की रातगही पर यैटाया। यह राज पाते ही निहरता



उसके प्यारे वालक की मार डाला। मा उसकी श्रोर देखती रही, पर चूँ न की, श्रीर न श्रांख से श्रांस् निराया कि जिससे भेद खुल जाय। स्वामी के हित के लिए धाय ने अपने बच्चे की यलिदान दिया श्रीर कुँवर के प्राण् यचाये। धन्य हैं वे मनुष्य जो श्रपने स्वामी के लिए श्रपने प्राण् तक निक्कावर कर हेते हैं।

पाठ १२-- उदारता--यैरी के। कैसे मारे (यस में करे)

पक दिन पक मनुष्य जाड़े की ऋतु में अपने वचों के साथ पैठा आग ताप रहा था और मनेहर कहानियाँ हो रहीं थीं। इतने में याप ने अपने छोड़े वचों से पूछा कि वैरी के मारने की अति उत्तम रीति कानसी है? पक ने कहा अवस्य असकी गीली से मार दे: दूसरे ने कहा नहीं उसकी कटार से मारे तीसरे ने कहा नहीं भूखों मारे।

उनके वाप ने कहा में तुमको इससे शब्दी रीति यता सक् गा। विना पक वृंद लोह वहाये और विना जीव लिये शबु मारा जा सकता है। श्रव में तुमको एक वार्ता तुनाता है। जिस्सी समय में एक किसान था जो यहुन ही श्रिप्र, कुराल श्रीर विह्विहा था। कुछ भी उसके विपरीत होता पह उसको पहुत कुछ मान लेता भीर अपरार्थी को यहुत ककड़ा दएह देता। उसके पढ़ोस में कोई ऐसा लड़का न था जो उस द्वार पर जाते देख कर दुखी न होता हो। यदि कोई कुला जो उसकी बचर्खों को देख कर भींकता, या कीशा जो उसके पढ़ोसी की दीवार पर बोलता, तो यह तुरन्त उसके बावुक या गोली से मारा जाता।



कि मुक्ते श्रपने ही काम से श्रयकाश नहीं है. में सहायता न कर्केगा। ग्रीन एक ममुप्य से जो उसके पास खड़ा था, वेाला कुछ चिन्ता नहीं है, में बसके। शीव ही मार डाल्ॅंगा श्रीर तुम देखते रहना कि में मारता हूँ या नहीं।

थोड़े दिन पीछे इस दृष्ट किसान के येल की जोड़ी की वहीं दशा हुई जो उसके पड़ोसी के वैठों की हुई थी। ग्रीन यह देख कर श्रपने येंठ और रस्सी लेने का भपटा श्रीर दल-दल की श्रार चलाः उसने सहायना करना ही नहीं चाहा बरन् सहायता देने लगाः नम सान्त्र सकते हो कि उसका प्रतिफल उसने पया पाया। किसान ने न्योरी चढा कोधित होकर कहा में तुमसे सहायता नहीं बाहना अपने वैल ले जान्नो। प्रीन ने कहा में खबर्य तुम्हारी सहायता कहँगा, क्योंकि रात होने आई और जो संकट दिन में होता है अँधेरे में श्रीर भी श्रीविक है। जाता है। वैली श्रीर श्रीक मेंयें ने बल किया थ्रै।र सब काम वन गया । उस रात की उसके चित्त पर इसका इतना प्रभाव दुश्रा कि उसने कहा कि श्रीन ने सुर्फ़ मार डाल। है। यह लन कर उसकी स्त्र। ऋ। छ। धर्म की दृष्टि से उसकी थार देखने छगो ानस्मेदेह शत्र मारा गया श्रीर न ता उसकी जान गर श्रीर न पत्र बुद लीह यहा। दुसरे दिन वह अपने दयान पहासी के पास गया अवनी कृतप्रना की स्यीकार करके जमा मोगी श्रार श्रद यही मनष्य जी दुष्कमों के कारण विख्यात था सबका प्याग हो गया

इस ससार में बल से जीतने धार उपा से जीतने में यहा श्रंतर हैं। बल से जीतना। ऐसा है जैसा बहते पानी की श्रारा में बौध बौधना। धोड़ें काल तक पानी के बहाब की बौध गैक सकता हैं। बदन्तु जब टुटना है पानी की श्रार पहिले की स्रोपेना



श्रंघों का स्वर्शेन्ट्रिय के द्वारा हुया हुई पुलकों का पदाने के तिए एक विद्वान ने अपूर्व युक्ति निकाल कर किनना पड़ा उपकार किया है। वर्षमाला का मत्येक अवार सांचे में दाल कर बनाया दाता है. बसहा क्षत्रची भाग कुछ बभए। हन्ना रहता है और अँगलियों से हने ही अंधों का अलरों के रूप का झान हो जाता है। टकड़ी की एक पटरी होती हैं श्रीर उसमें कोड़े करे होते हैं। पररी के प्रत्येक कोड़े में बर्रामाला के पक-पक्त प्रकार के अजर भरे रहते हैं। स्वर्शेन्द्रिय के द्वारा हुछ उन क्षत्ररों की पहिचानना सीखने हैं। बद वे कत्तरों की भती भौति पहिचानने सगते हैं तद उनको श्रवर मिला कर शब्द बनाना सिखाया जाता है और जब वे समने पहले हैं। आने हैं नव उन्हें शब्दों के लेख कर बाक्य बनाना सिखाते है अधो के पटने की पत्नके मोटे आर पाउँ कागजों पर हरवार कार्ना है। याहमें उन काग हों की यानी में सिगी देने है जिसमें बजरों के रूपे नहीं सात दसर धादें अधे दले इप अवरों के पहने में पहिचानने ही है इसमें उन उभरें . डावों पर संगुली केंग्रका उबा हुस्रा वेश्कावट पर सकते हैं इस रोति से बर्ध अपने सामानया जन्म अन्य सामान्या का न्यासर से माख सहते ह

विद्वानों ने क्षप के शिखन मिखन के मार्गाने निकासी है क्षप के लिखने का कार्यक पत्र चे करें में त्या कर रफ्खा जाता है जिसमें मार्थ ने सके कुद्ध उने बीत पहले क्षपे कर्यना एस्खा नहीं याच मकत्र थे परम्मु उन्हों में से एक ने पेमा बुन्ति 'नेकासी कि लिखने ममय कार्यक के नाचे एक रेशमी करहे का कुक्डा रख 'लेका झाय जिसमें के अन्य कर्मात पर लिखे झाय उनका क्षाकार उस कपड़े पर उमर

१४ सम् । वेरी ही भूगाल सिलाने के लिए माद कागत पर देने

बाने। फिर बन पर भेंगुनी और कर ये सहज्ञ में लिखा दुवा

नको बनाये जाते हैं कि उन में बालग-बालग देशों के सीमाधे

कर लार छाए रहते हैं थे।ए दुर्गी प्रकार नगर, गाँच, चहाड़, नहीं, माञ्च बलावि के चालत बालत विद नियम कर लिये हैं।

साम विशा की पुस्तका का गुगमना से बदने के लिय

व्यक्ते के बनार धनाय के भ्रमुखार लक्ष्मी के प्रका देखा होती।

शानी है। विकासी ने स्वत संयों ही की विकासियाने की

वृश्चित मही निद्धाली है गुगा दीए वहिला के। की जिल्हाने

दरान की योक्सवी लाखा है। यस अवन क्रवय कर साथ बदना इ. डाटा दूसरी पर बदर दिया करने हैं। यह रेक्ट्रि

सब कुशा में उन में अनाम के बाव बात में हैं है है है है है है

बाह्य हो। ही येगालया का १६८ वर घर व सा वर

यान का राजी में क्या बना कर सुरू हता कर है।

सर ह थील वर रेक रवन पर 'सा रह का उसा है। 

UNAMER OF THE COLD OF PROPERTY OF THE

2 8 3 5 2 5 5 4 4 4 4 4 7 7 44 118 11 8 5 11

HAR HARMY DO DITHE POLICE STOP STORE

48 CH . F 41 17 41 4 (45 F1) 4 211 42 11

444 444 4 4 1 1 141 1 2 14 7 1 41

· CTP OF HIMP BY HIMP F B ST FT

was real first of the star of the star

the street a st. and a state state

हमता द्वामा। परन्तु जिन लोगों ने गूँगों का यातचीत करते देखा है ये ही उनकी शीवता का जानते हैं। गूँगे श्रपने मन के भावों का विना भूछ चूक के संकेत में प्रकट कर सकते हैं। पहिले तो पेसी सांकेतिक भाग के वाहनेपाले रक-रक कर बेहते हैं, पर अभ्यास है। जाने पर पड़ी शीवता से पातचीत करने हमते हैं।

श्रायरहेंद्र के ख्वलिन नगर में एक पाठशाला है जिसमें सवा सी गूँगों के लगभग शिजा पाते हैं। बनको वहाँ लिखना-पढ़ना और नक्शा खांचना इत्यादि उपयोगी पातें सिखाई जाती हैं। कलकत्ते में भी एक ऐसा ही विधालय गूँगे और बहिरों के लिए खाला गया है।

पाट १४-शीन हा श्रीर उससे यचने के उपाय

जा रोग वचों का होते हैं उनमें शीतला बहुत प्रयल है। कुछ मनुष्यां का यह मत है कि नी महीने गर्भ में रहने से जो मां के रिधर और मल की गर्ममा वालक में समा जाती है वह उत्पन्न होने के पीन्न किसी न किसी समय विप हो कर फुट निकलती है। इस कारण शीतला मब मनुष्यों ने अवश्य ही निकलती है। इससी किसी का यह मत है कि शीतला पक रोग है जो और रोगों की मान आवही उत्पन्न होती है। मब जानते है कि शीतला की केश आपि नहा है केवल उसके निवारण का पक उपाय है कि जिसके हारा यह प्रवल रोग शीत हो सकता है और जिससे फिर उसका निकलना अथवा दुख नाई रूप से उभड़ना किलने है। जाना है। मनुष्यों ने रोगों की विकित्सा के लिए अनेक अनेक अश्नुत उपाय निकाले है। इस सबसे विविध्न साधन वह है जो शीतला की शीति के



भरा चेष निकलता है यही काम दे जाय: यह सोच कर उन्होंने शीघ्र ही उसका अयोग किया और उसका परिणाम बहुत ही संतापदायक हुआ। पार्टियामेंट ने उस परिश्रम के पुरस्कार में सन १८०२ ई० में एक लाख रुपया दिया श्रीर सन् १८०७ ई० में उनकी सदायता में दो लाख रुपया और देने की सम्मति प्रकाश की। तयसे येक्सिनेशन अर्थात् टीका लगाने की चाल प्रवतित है। गई। टीका लगाने की किया कुछ कठिन नहीं है। किसी हए पुष्ट वालक के टीका लगाने के अनन्तर शाटवें दिन फफोलें से चेप निकाल कर श्रपवा अस्पताल से उसकी मँगा कर उपदेश के अनुसार लगाने से शीतला का निवारण हो सकता है। यदि टीका लगानेपाला कुग्रल हो क्रीर शह चेप का प्रयोग किया आय तो हानि की किसी प्रकार संभावना नहीं हो सकती। जो कभी टीका छगाने के पीछे उसका कुछ प्रभाव न जान पड़े तो खबरय समस लेना चाहिए कि उसके प्रयोग में कुछ दोप रह गया। ऐसे श्रवसर पर फिर इसरी बार टीवा सगवा देना उचित है, धार को शीतस निकल भी चाई हैं। ते। निकलने के पाँचवें दिन तक टीका समया हेने से कुछ हानि नहीं है, फ्योंकि ऐसा करने से धवश्य ही इसकी प्रवलता घट कायगी। टीका लगाने का सबसे श्रच्हा समय जाड़े की प्रान् है। जितनी जल्द हो सके टीका छगया देना चादिए। जिस सहके की कोई रोग न दो तो जन्म से पंद्रह दिन के पीढ़े श्रार तीन महीने के भीतर टीका लगवा देना उचित है, पर दुर्वल धार रोगी यच्घों के जय तक हाँत न निकल आपे टीका न लगपाना चाहिए। मनुष्य की दी पार टीका रुगवाना चाहिय, पहली बार बंबवन में श्रीर दूसरी बार समह बरस की भवस्या में। इसरी बार टीका लगवा के क के अन्य कर के लिए बीलना में निकल्पने का सम आव बहुता है।

हतता है। यह गेगा किनायन से भी काल चतुन बेला था। बांद्र पर मारण निज्या ने कि लदन से कही दीका प्रमतिन होते हैं बहुच बन्धे के तथा सुर्व्य से क्योतित्य के कारण होती थी, वर्ष कर के स्ट चनार्थ पूर्व से च्यातित्य के कारण होती थी, वर्ष कर कर सरक चनार्थ पूर्व से चारण हो गीतिसा स्व देती हैं कर कर सरक चन के जरून के नीतिस स्थवनाल से मी गीतियाँ

कर को का निर्माण मुन्यू भे का प्रवास की मीता है। पेडर पर्यंत्र कर जो हो जो का करनाम में मी भीताओं है हो किये के नाम करूप के जानाम महत्य है। यो करना उत्तर्भ रोक्ड के नाम जिस्सा पड़ है है। यो महत्यों में हर दिस्सी टिटर रंपक्या एक ही हरा कि मानवान में रोख सामी का स्वार रंप है। यू पा कर रहार में स्वार स्वार मी साम

The second secon

The second secon

\*\*\* \* \*\*\* \*\*\* \*\* \*\*

संपूर्ण प्रमाणें से सिद्ध है कि टीका लगाना मनुष्य को ग्रीतला से षचाता है श्रीर यदि उसे रोक नहीं देता ते। उसकी प्रवलता को श्रवश्य ही कम कर देता हैं। इतने पर भी भारत-निवासी मनुष्यज्ञाति कूर रोग के निवारण करने का उपाय स्वीकार न करेते। इससे श्रविकक्या रोककी वात हो सकती हैं। जिन उपायों से सर्देव प्राण्डता की संभावना होती हैं श्रीर जिनकें। सुप्रतिष्टित डाकृरों ने परीज्ञा करके लाभकारी टहराया है, मनुष्य श्रपनी मुखेता के कारण उनका तिरस्कार करते हैं।

## पाठ १४—ऱ्यालामुखी

श्चादि में पृथिवी पिघली हुई धानुझों का एक पहा भागी नेला था जो घीरे घीर ठंडा है। गया है। इसमें संदेह नहीं है कि अब भी पृथिवी के नीचे वहें यहें श्चाम के कुंड हैं। इसके यहुत से प्रमाण है। वहुत से देशे, में गररों खाने खोड़ी गई है, उनसे यह बात विदिन हुई है कि जितनी गरराई श्विक होनी जाती है उननी ही गरमा बढ़ती जाता है श्रीर क्या ध्ववक है कि जो गरमों इसो नात बढ़ता जाय ते। करूट तक ऐसी गरमी है। जाय कि मिट्टी श्रीर प्रथम के। गला कर भाव बना है। इस बात के श्रीर भा प्रमाण है। बहुत से स्थाना म पृथिवी के नीनर से खालना पानी निकलता है। एसा एक तम कुएड संदर्शनाथ के पान है। है जिनमें से खालना पानी दिसा के पान है। अहम कह से में मार होते हैं जिनमें से खालना पानी धरती से तीन कुट तक ऊंडा उठता है। पृथिवी के भीतर श्राम का होता है। विश्व आह ला हो।

खालामुर्खा पहाड़ों के मुंह ऊपर की श्रे**ार** खुले रहते हैं,



दुनिया भर में तीन सो के लगभग ज्यालामुखी पहाड़ हैं। यह पहुपा समुद्र के समीप दोते हैं। साम के बा प्रज्यतित पहाड़ 'कोटांपैकसी' है जो अमेरिका महाद्वीप के प्रेंडीज़ पहाड़ की श्रेणी में हैं। हिमालय के सरशा इसके म्हेंग पर्क सेटके रहते हैं और जय उद्भान दोने की होता है तय यक्त गरमी से पियल कर पहाड़ के नीचे की यहें येग से यह चलती है जिससे समीप के देशों की यहत हानि पहुँचती हैं। हवाई द्वीप में 'किलोवा' संसार में सबसे यहा ज्वालामुखी हैं। उसके मुँह का घेरा नो मील हैं। उसमें आग के कुएह हैं जिनकी ममक तीस-वालीस फुट तक कैवी बठनी है। यूरप में पटना, विस्युवियस श्रीर हंकला प्रसिद्ध ज्वालामुखी हैं। पश्चिमा के दिक्का पूर्व के हांगों में मी कई ज्वालामुखी हैं। पश्चिमा के दिक्का पूर्व के हांगों में मी कई ज्वालामुखी हैं।

पाठ १६-विजली का तार (नारवर्की)

पाठ रहन्य जला का तार (नारवका)
कारमी और अरवी की कविता के कहरवाक का गुण
वहुत प्रसिद्ध हैं। कहरवा के नाम ही से उसके गुण प्रकर हैं।
कारमी भाषा में काह का अर्थ तृण और रंग का खाननेवाला
हैं। गुनानी प्रन्थों से यह जाना जाता है कि रसाममीह से
उ०० वरस पहले वहां विज्ञान धेनी ह के। इस कहरवा के गुण
विदित थे और यह गुण यह ह हि यदि वहरवा की रेशमी
कषड़े से रंगड़े तो उसमें तिनके खानने वो शक्त आ जाती
है अर्थात् पास ताने से तिनके उड़ इड कर उसमें विषक जाते
है और थोड़ी देर चित्रके रह कर आपने आ ह गहर हैं।

कहरूबा एक पाड़ी बस्तु सीट सी होती है श्रीर बड़े बानारी से सिल्ली हैं



है कि यह हाथ डेट् हाथ के कांच के पात्र से निकाली जाती है । वह कोसों रुम्बे-चाड़े धादरु से यनती है ।

एक प्रकार की विजली धाराप्रवाही होती है। जस्त वा तांबे पर तेजाय डालने से जी रासायनिक संयोग होता है उससे वह निकलतो है। एक फांच के परतन में एक पत्र जस्त का श्रीर दुसरा तांवे का डाता, दोना में एक एक तार गांध हे। श्लीर कटोरे में गंधक का तेराय डाल दे। दोनों तारों की मिलाने से विज्ञली की धारा चलने लगेगी: सार श्रहण रहने से चारा वन्द्र हो जायगी । यदि तार हाखें मीह हम्बे ही श्रीर मिले रहें ते। भी घारा वन्द नहीं होती। इस धारा में अनेक गुण हैं। यक ते। यह है कि घारा का तार कपड़ा लपेट कर लेहि की हड़ में हपेट दिया जाय ता घह लोहा चुन्यक हो जायगा श्चार उसमें इसरे साहे को खींचने की शक्ति हा जायगी। चम्यक की मई जी कुत्यत्मा में रहती है उसके ऊपर घारा का तार ले जाने से सुई, जो उत्तर-दिक्खन रहती है, पृरव-पिक्सि हो जाती है। इसी गुए को देख कर एक स्थान से दसरे स्थान पर समाचार भेजने का यंत्र बनाया गया है। सुर्र के तार में यहां से कलकत्ता समाचार भेजना हुआ तो धारा ऐसी रीति से भेजी जाती है कि कलकते के यंत्र में कभी धारा मई के ऊपर से बते और कभी नीचे से। इससे सुई कभी बाये' गिरती है कनी दाहिने।

एक बार दायें और एक बार बायें के संकेत को एक अत्तर माना; देा बार दायें और एक बार बायें को दूसरा और रस रीति से वर्णमाला के सारे अत्तरों के संकेत बना लिये हैं। आज-कळ इस सुर्द का प्रवार उठता जाता है और चुम्बक बनाने की शक्ति से विशेष काम लिया जाता है। रसमें घारा रक रह



ता कर्म-इंद्रियों हैं, जैसे हाथ, कान, नाक, मुँह, आदि; आर जिनसे सारे शरीर की पुष्टि होती है और कर्म-इंदियाँ अपने अपने कामों में प्रवृत्त की जाती हैं. यह छेग हैं। फर्म-इंदियें। की रोग से बचाने का उपाय यह है कि उनसे उतना ही काम लिया जाय जितनी उनमें सामर्थ है, श्रीर किसी इंट्रिय में दःख अनुभय होते ही उससे काम सेना यन्द कर दिया जाय। पर यह भी न भूतना चाहिए कि इंद्रियों और शरीर काम करने ही के लिए दर्ग है काम न लेने से यह निकम्मे है। जाते हैं। काचारण कामकात के सिंघाय गुरीर से परिधम के काम निषमानुसार लने संघट पहना है। इस नियमानुसार परिधम के स्यायाम कहते हैं। स्यायाम देव प्रशास्त्र होता है। यह साधारण दुसरा विशेष । साधारख व्यायाम पर हे 'जयम सार प्रशाद क' 'हजना पड़े जैसे घोड़े का स्वकृत करने सहस्य अपना से हैं। इस केंद्र यहा खाना खराप वयसपार अससायराव धरा की वस करना पर जन १८३१ जिलाना चित्राना क्षाप्ति । स्यादासी संक्षेत्र हरता ११ व. विका १४० च ४१ में श्रीने विक विमालका वर्ष्टमा वयह हमरण है। देशास का पार्त प्राथमिक ल भी का रक्ता प्राथमिक

्या याचा के रेस्टाय 43-45 रहते. या इत ताला ह्या द्यार प्राय या गर्भा की स्थाल का अंग्रेस स्थाप स्थाप अंग्रेस

हर्भ्या रहन । पहुण के एथा स्थमन हो जा हर्भ्या रहन का प्राय प्रमास हर परित्याण स्थमन था रही का य यह ह जह ता । यो तन प्राय १६ स्थाय का हर तह स्थात है हो हर स्वचार होंगीर की स्थम्या के एथा है है या से उह देश इट्डामा से नह है किया है । नह से सह ते के था है है ।



रकावट न हो। जप ६म लोग सौल लेते हैं तप स्वच्छ ह्या भीतर जाती श्रीर दृषित ह्या पाइर श्राती है। इससे जिस घर में इम सीते पैठते हैं उसे पेसा बनाना चाहिए कि पाइर से ह्या श्राती रहे, नहीं तो घर में घुरी ह्या भर जायाी। नावदान-मोहिरियों में पानी श्रीर घर के भीतर या पास कुड़ा गीवर सड़ाने से चड़ी हानि है। खर्तों में खाद के लिए फुड़ा इकट्टा करने का काम हो तो ऊपर से थे।ड़ी-थोड़ी मिट्टी भी साठते रहना चाहिए कि जिसमें उसकी दुर्गन्य दूर हो जाय।

चर्कों का भी स्वच्छ रागना श्रारोग्यता के लिए श्रावश्यक है। जो चरत्र एक बार पाने में भीग जाय, या तन पर लगा-तार दस वारह घंटे रहे, उसे धा डालना उचित है, नहीं तो शारीर का मैल, जो उसमें लगा है, सब शरीर में लग जायता।

इतना तो स्वच्छता के विषय में हुआ, अब कुछ धेाड़ा सा

भाजन श्रीर चरत्र का वर्णन करते हैं।

भोजन ही से ट्राह. हाड़, मांस वनता है। इससे भोजन भी ऐसा होना चाहिए कि जिसमें शरीर की शावश्यकता के श्रनु-सार सारे पदार्थ हों श्रीर जट्दी पच जायें। एक वार पहुत सा खा लेने से देा-तीन यार थेड़ा-थेड़ा खाना श्रच्छा है।

चस्त्र पिट्निन में सेवल लज्जा ही का विचार नहीं होना चाहिए। वस्त्र पेसा पहनना चाहिए कि जिससे अकस्मात् सरदी-गर्मी की घट-यह से शरीर वचा रहे।

सरदी से सिर श्रीर हाती की पचाये रखने से ज्वर, खांसी श्रादि का डर नहीं रहता।



द्भक्षे कर सकता है। लिखने का अच्दा कागुज पढ़िया विधड़ों ही का बनता है। सन के कपड़ें के चिधड़ों का माटा और पुरानी रस्सियों का मटीला कागुझ यनता है। मटीला कागुझ बहुधा प्रस्तकें। पर चढाने और बेटन के काम में बाता है। विषहें के दकड़े गरम पानी में धोये जाते हैं। पहले विधरे पानी में सड़ाये जाते थे. परन्तु ऐसा करने से कागुज़ बिगड़ जाता है। पहले चिधहां के साफ करने में यहां कठिनाई पहती थी। बहुधा सङ्घी के पानी से धोकर विधड़ों के। धूप और श्रास दिखाते थे इस पर भी कागज वैसा सफेद, जैसा कि चाहिए. नहीं होता था। इस दीप की दिपाने के लिए कागज़ की इसका नीला रंग देने थे पर श्रय क्लोरिन गैस से सहत ही में कागज सफेट हो जाता है जब कल में चिथड़ी के दकड़े बहुत महीन हो जाने हता क्लोरिन गेस से उनके। थे। कुट पीस कर उनकी लुट्टी बना लेत ह और इस लुट्टा का कागज़ बनाते हैं। कागज है। प्रकार से बनता है—हाथ से वा कल से । पहले हाथ से धनाने की गीन (लखी जाना है



ते नियासी तुर्दे राष्ट्रीने सन् १७=७१० में निवासी थी। १नवे सिंह देगलेंड में इस कल का प्रचार हुआ। यह नो दिन दिन हों की पेसी उपति होनी जाती हैं कि निन कोई न कोई प्रदेशन रीति निकासी जाती हैं। यागुस भी पक से पण उत्तम, पुरु देशन चिक्रने यनते हैं दीर सुधियी के एक सिर्दे से हुसदे सिर्दे तक कागृत का प्रचार हो गया है। असे द्यवदे यागुस स्वय पनते हैं चैसे पहले स्वय में भी नहीं दिखाई पड़ने थे।

# वाठ १६--इं।पर्दा और युधिष्टिर का संयाद

चोनों भाई पागल्य अये में खपना राजपाट द्वार फर यन का चले गये। यहा पर दिन संख्या समय है।पदी के साथ बंदे हुए बे लें।ग अपना ३ खरा गई थे रतने से पानवता देश्वदी घुवला कर पाप्यापुर से बेश्ला महाराज 'द्राखिये हम लावो। का बनवास दकर उस पंचा दयोधन का मन मेला न इच्चा हम लाग वा स्मद्भाला पहना कर घर से निकलवा दिया एक स्था : सक् दिख न हया मगस्थन में ता उसक. हर्य प्रधा ३ हे जा उसन अपने वर नार श्राप पेस धर्मामाका एना खरा खरा सुनाह हो खप ऋष स्था क योग्य ध सो श्रापका व दन्ता बहा अब दक्त श्रपना सख मान रहा है उपापन 🕫 शहान उशासन इन बारों के आफ़ संधास तक न गरा। हो। जितन के एवं सभा स्वेट धे उनकी श्रोद्धां से यारा बटना था। जब से दखता है कि श्राप पहल किस आसन पर विराजन थे थ्रीर अब कहा वेटन ह ना मुभका वडा माच होता है। देखिये श्राप पहले जहा-सिरासन पर येठा करने थे, श्रव यह वृक्षासन पर बट द्राव



बाता। महाराज ! वहें सुन्दर राजीर मादी के पुत्र सहदेव की यन में दुखी देख पयी बाप दुर्योधन की सहते हैं। में महा-राजा दृषद् की बेटो. महाराज पांडु की यह, भृष्टयस की पहिन शीर शाप सरीखे पीरों की पतियता स्ती हैं: सी मके एन में इस प्रशार से दुखी देख कर साप दुर्योधन के सन्याय की कैसे सहते हैं। इचने भारयों का खार मेरा दल देख कर झावड़े चित्त की क्लेश नहीं होता। इससे आन पड़ता है कि महाराख। आपके ग्ररीर में तेहा रही नहीं गया। यह यान सिद्ध है कि सबी आदि में कोई ऐसा न निक्षतिमा जिनमें तेहा न रहे कीर शापमे उसका शमाय देख का शापके सत्रों होने में मक्ते सन्देह होता है। जे। जबी माध के अवसर पर मोध नहीं करता सप कोई उसका अनादर करने है। इस तिए आपकी शब्दा पर समा करना डाचन नहा है और रसमें कुछ संदेह नहीं है कि छापड़े थाड़ हा को व से शब्दों का नाग है। जायगा इसी प्रकार जा स्वयं समा के प्रवसर पर समा नहीं करता है वह सबका आवय होता ह ब्रोप अपने इस लोक खोर परसाक का विवासना है

इतना वचन कह कर इंच्या उदास हो गई महाराज्ञ युधिष्ठिर उसकी धारज दिशने क लिए वेलि प्यारी 'हेखा सीध ही मसुष्यों का न श करता है और नाथ ही से मनुष्यों की अवनित ना होता है उससे कीथ ही उन रोनों का मूल कारण है इस्तों जी मनुष्य भी र की जातना है उसका कस्याण होता है जीए जी नाथ के नाथ सर सकता परम हारण मीध उसका नाथ कर डालत है विखास तो जब मीध में प्रजान प्यार 'वनार देख पड़त' है तब नेता हम सराय समल्द ' नाथ कर हो लगे लोग मनुष्य सव



द्वीर उनका क्य कर झालता है। इसतिय तेवस्वी मोध से दूर भागते हैं। क्षोध के वर्तामृत महुष्य में बतुराई, ग्रस्ता. शीवता सार प्रतार यह गुए नहीं रह बाने। के मनुष्य क्रीप हो होड देता है वर पढ़े तेड की प्राप्त होता है। के पृथिवी के समान समा कानेवाते मनुष्य न हों ना सहाई रोकनेवाते से मेंट कमी न है। गाली देन कर महुष्य गाली दे और मारने पर मारे ता प्रास्थिं का विनग्र है। जायगा पिता पुत्र की ब्रीर एवं पिता हो, पति त्या दीए त्यां पति की ऋोध से नाग्र करने हमें ने। प्रक्षा की बढ़नी न होगी करोंकि नेत ही से प्रका की रदनी होता है की बार के प्रकार ही ब्रायित में तम हरत बाहिय परोपर तमाही से प्राणियें की इसिन होता है। राजी देने फेर मारने पा के विज्ञान समर्थ होने पर भाजन अस्त है उसे उसमें पुरुष हैं और उसके स्वाप्तस्य । इ.स. रतस्यस्य व व इ.सी. स में ६ दोनों नर्हु उट्टा १८ ज्या , प्रकाश्यक्त का युद्धन पहुँ तसाधमते। संद्या परते वस उद्यादक साह सम्बद्देश दर्दन रामच्या स्था हो द्राहे जमाही से बहु चारते साल से दाह जातु । शहा हा । हेर यह ज्ञानना हे उसके अब,यालया काला खाह्य हो दश जिस समाम सराज का स्थर हादना लगा का हमार समाम मनाय केसे हाइ सक्त है। जा नद्र का नाह क्षाका प्रा में के संपर्दर है पर दें। प्रसान के के लात केरत है (ಸಹೆಕ್ಟ್ ಕ್ಷಾಕ್ಟ್ಯ



गया—"पेसा न हो एक दिन तुम्हें इन यातें। पर पद्धताना पड़े जा तुमने पेसे मनुष्य के विषय में कही हैं जो उदारता में तुमसे किसी भौति घट कर नहीं हैं।"

इतना कह युवर्टी प्रणाम कर अपने घर श्राया श्रीर श्रपने मित्रों से विदा हो कर एक जहाज़ में, जो नेपल्स की जा रहा था, सवार हो लिया। अपना देश होड़ते समय उसने श्रांख से एक श्रांसु तक न ढाला।

नेपस्स के राज्य में उसका कुछ क्षया उधार फैंछा हुझा धा। वहाँ से उसकी लंकर घट पर टापू में जो वेनिस के राज्य के ख़धीन था. जा थसा। परिध्रम द्वार व्यापार में पायता के कारण यहाँ उसने उससे भा स्रिथक संपत्ति एक ही दें। साछ में पक्षत्र कर ली कि. जितना जिताखा में उसके पास थी। उदारता द्वार कीत में उसका गैरिय उसकी संपत्ति से घट कर न था।

व्यापार के हुन जिन स्थानों में यह यह या जाया करना था उनमें से पर स्थान का निस्त था रहना के यहन से राज्यों से का निस्तवान से विराध था के र विभाग पर जिने हा से प्राप्त में अपने वहां के पर प्रथान पुरुष से उसके घर पर मिलने गया। वहीं उसने पर सिहार गुजाम के जिनके पेरा में वेडियो पड़ी था, देखा यह सुकुमार युवा पुरुष पर्याप में मारे पिसा जाता था है। ये से जान पहले था कि उसने पहले कभी पेसा कर नहां बटाया था जिस प्रथाने काम करता था कभी कभी कभी कभी कभी कर पर सहाग देकर सुकु जाता था

युवटी ने उसका श्रार करणामय टाए से देखा श्लोर इटली भाषा में उसमें उसका होल पूता श्रवना मानुभाषा के शन्द



कर पड़े प्रेम से सरकार किया, अन्त में उसने उसम अयसर पाकर उसकी जिनीआ भेज दिया। उसके पहुँचाने के लिए उसने एक स्वामिमक नैकिर साथ किया और सुख का सामान यात्रा के लिए इकट्टा कर दिया। एक हाय में कुछ अग्रिफेंचें की थेली और उसरे में एक चिट्टा देकर कहा—"मेरे त्यारे युवा! में वड़े हर्प के साथ तुमके अपने घर अधिक काल तक दिकाता परन्तु में अच्छी तरह समस्तता है कि तुम्हारा मन अपने मित्रों से मिलने के अर्थार है। ही है। में सोबता हैं कि मेरी और से यह यहा निष्टुर काम होगा यदि में तुमके रोहुर शीर उनकी प्रसक्ता में जो नुम्हारे फिर मिलने से होगी, याधक होऊं। याश की इस नामां की स्वीकार करें। यह पत्र अपने अपने पिता है हाथ में नेना। कराचित् उसके कुछ मेरी नुष्ट हो। आधक होऊं। साला की हम नामां की स्वीकार करें। यह पत्र अपने पत्र हो का साला हो के स्वीकार करें। यह पत्र अपने का नेना। कराचित् उसके कुछ मेरी नुष्ट हो। आश्वाहां है वि तुम में मुक्ते। कमो न मून् गा श्वार में अशा रखता है कि तुम मी मुकते। न मूनोंगा श्वार में अशा रखता है कि तुम मी मुकते। न मूनोंगा श्वार में अशा रखता है कि तुम मी मुकते। न मूनोंगा ने

छोटे अहानों ने अपना कृतवता अक्ट की है। र प्रेम पूर्त कर से अकाण किया है। र टीनो को आखों से चलते समय अपन पहल लगे पुता कुरल से अपने घर पहुंच गया। जब उसके मा थाप ने जी शिक्सानर में हुने हुए थे उसकी देखा तब उनके आनल का वारपार ने रही क्यों के यह तो यह सममें हुए थे कि जिस जहाज में वह गया था वह समुद्र में हुव गया जब बुद्ध अहानों ने दो जाना कि उसका वेटा ट्या निस्म में कुँद था तब उसन पूड़ा किसने मेरे साथ येसा यहा भाग उपकार किया कि तुमके फिर मुक्त में सिलाया लड़के न कहा इस चिट्टों में लिखा है अड़ानों ने जी चिट्टा खानी जे। उसमें लिखा था — उस नीच शिरायहार के बेटे के। जिसने तुमसे कहा था कि किसी न किसी दिन तुमके। पहुटारार



किसी समय मुखी धरती थी दूसरे समय पानी चढ़ आया है। पदि किनारे पर कोई पहाड़ी आदि हों तो सुम देखेगे कि जो पत्थर एक समय खुले थे दूसरे समय पानी में हूय गये हैं।

यह पानी का उतार-घढ़ाव नियन समय पर होता है। छः पएटे के समभग पानी घरनी पर चढ़ा फरना है; और यदि किमारा चारस है। ते। पानी फेल जाता है धार यदि ऊँचा हो। तो पाना कुछ दुर चढ़ कर एक जाता है। फिर दुः घएटे तक पानी घरती से हटा करता है। इसी का नाम ज्यारभाटा दै। यय तुमको जानना चाहिए कि इसका क्या कारण है। यह द्याक्ष्यंच शक्ति से होता है, क्षर्यात् यह गांक जिसहे द्वारा पिएड भाषम में एवं इसर दें। श्राना द्यार खाबा करने हैं। जितना पिएड यहा हाता है उसी व शतमार उसमें शावपंत र्शाल होती है। पृथ्या तमका पावना कार खावता है द्यार पदी बारमा है रव अब वह अवस्तान बरता है ता सा हम उस पर से हट कर हथा संसर चल जन केंग्रन पृथ्वी पर क दद पिगद कावस माध्यस कर माजागर प्रशास बह हीते स इसका अवयानका र उनका आवार र स की क्षपेका क्षांप्रकृति पृथ्वा हर । १९०० कावारण शास्त्र व द्वारा यह हुसर का छ छ ४४ । इस १२० ११९ पर दे देव मध्देशासा एक पृस्तर का स्वापन रा ५०० चल्ह्या की भाक्षण दाल हमा प्राप्त चाना था रख्या हसाल विसंद कारत ३३ हमारा का वा ट

মাৰ্পি ৰা পাৰ্য ল'ৰ মাৰ্থণ জ' মনাৰ গুংবা ভাৱন নাৰা ৰং আধ্যাল লি ল'বংবা ৰা বাং আগ এনাৰ বাহুৰ নানাৰি হি অনা বাং চুব বহাৰ ল'ব নাৰালৈ স্বাসুন্



दिन और दिनों की अपेक्षा यहुत ऊँचा उठता है। ऐसे ही दुसरी श्रार पानी बहुत नीचे गिर जाना है। जब सूर्व श्रार चन्द्रमा एक ही सीध में नहीं होते. तब श्राकर्पण दोनों के आकर्पण के खंतर के बरावर दोना है: श्रर्थात् चन्द्रमा का आकर्षण घट जाता है श्रीर इसी से पानी कम ऊँचा उठता है। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा २५ दिन में करता है। इस वीच में दे। बार सूर्व श्रीर चन्द्रमा एक सीध में आ जाते हैं, (१) पूर्ण-मासी के दिन जब नुर्य और चन्द्रमा आमने-सामने रहते हैं श्रीर पृथ्वी वीच मे श्राजानी है (२) स्रमावस के दिन जय चन्द्रमा और सर्व के बीच में रहनी हैं यह साप्ट है कि पूर्ण-मासी श्रीर धमावसका पानी सबसे ऊँचा उठता है श्रीर गिरता हैं: इसके। सँगरेज़ों से 'स्थिग टाइड' कहते हैं। इसके विषगैत भएमी के दिन सर्व द्यार चन्द्रमा का श्राकर्षण एक-ट्रमरे के विरुद्ध होता है इसलिए न ने पानी यदन ऊँचा उठना है श्रीर न नीचे गिरता है। ऐसा महीने में दायार होता है। इसे अँगरेक्षों में 'सीप शाहड करत र

### पाउ २२ -- वर मार्ग द्वार यम(मार्ग

यह भूमगढ़ल चारा चार हवा से एका हुआ है परस्तु है। सी माल से जावर कुछ का त्वा नहार जुन्हें इस वात के सुनने से वहा झाध्य हाता कि हवा स बान है। यह तुम पहुनसी कर किसा कथान कर रक्ते तो अपर का का के बेक्स से नाचे की कह हवा चार कर राजे हैं। इसा तरह नीचे का हवा नागे और अपर का हलका होता है। यह सी लगने से नीचे की हवा कल कर दलका है। जाती है तो जावर



श्रीर फिर एक शीशेकी तीन फुट लम्बी नली में, जिसका एक श्रार का मूँह बन्द होता है, पारा भर कर श्रीर उसके दूसरे श्रीर का मुँह उस प्याले के भीतर ले जाकर उसे उसमें सीधा खडा कर देते हैं। नहीं के भीतर का पारा कुछ दूर नीचे उतर श्राता है, परन्तु उन्तीस या तीस इंच तक उस नली में उहरा रहता है: फ्योंकि नली के भीतर तो पारे के ऊपर शस्य है, अर्थात् हवा का कुछ भी दवाव नहीं है, श्रीर वाहर प्याले में पारे पर प्रत्येक वर्ग इंच पर साढ़ सात संर दयाव है। निदान जय कहीं किसी कारण सं हवा कुछ हटकी होगी. नली का पारा नीचे उतरेगा श्लीर जितनी हवा भागे होगी. अर्थात उसका द्याध घढेगा उतना ही पारा ऊपर चढेगा। जितना कैंचा चढेगा हवा उतनी ही हलकी मिलगी इसी से जिस पदाह पर जितना पारा नीचे उतरता देखते ए उतनी ही उसकी उँवाई मानी जाती है। इस प्रकार पहाड़ों का उँवाई नापने में परामीटर पड़ा काम देता है । बरामीटर में एक बीर भी गुण हैं यह भी जान लेना चाहिय। जब श्राधी द्याने को होनी है ह्या का द्याय घट जाता है होर पारा गिरता है। उसकी देख समुद्र में मोस्तो चंत्रस्य हा जाते हे धार डांचत प्रयस्थ करने छगने हैं।

#### ५--- वमामारग

साधारण योलवाल म लाग (नत का करतार आज यहा गरमी हैं, लोहा गरम हे। हाथ स उत्तर ज वस्तु गरम लगा उसको कहा कि गरम हा जा ट्राइट्स इस्टा क्रिक्ट क्रिक्ट कि उसको हैं। स्त्रप यक्ष वर्तन म गरम क्रिक्ट दूसर स ट्राइट दाला सर कर यह में दाहना हुआ स्वार्ट स्वार्ट क्यों हाथ थे। इ



पोला गोला होता है। इस गोले में श्रीर कुछ दूर तक नली में पारा भरा रहता है श्रीर नहीं का खला सिरा पंड कर दिया जाता है। इसके पीछे गोले और नली को गलती यरफ में हाल देते हैं। पारा ठगढ़क पाकर सिमिटता है और नली में नीचे उतर कर ठहर जाता है। उस टिकाने कांच की नली पर एक चिद्र कर देते हैं । फिर यन्त्र की खीलते पानी के ऊपर भाफ में रखते हैं और जहां तक पारा चढ़ना है वहां भी चिद्र कर देते हैं। इन दोनों चिन्नों के बीच नली के भाग की कई भागों में बांट देते हैं। धर्मामीटर कई प्रकार के होते हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध फारनहाइट का है। इन धर्मामोटर में बरफ गलने के स्थान पर ३२ का श्रंक श्रार खेलिन पानी की भाफ के ठिकाने २१२ का चिट्ट रहता है छार बीच का भाग १८० छंशों में येंटा रहता है। इस यंत्र से गरमी नायने की रीति यह है कि हवा की गरमी नापना हा तो वक ऐसी के उसी में रफ्ला जहाँ हवा आर्ता जानो है। पानो व गरमी जानने के लिए यन्त्र पानी में डाल दो। मनध्य क सराग का गरमी जानने की कीख में द्या दा। मनुष्यं क शरार मं /द. देले की गरमी होती है। हवा धार बन को गरमा स्मम स्राधिक होने से गरमी लगती है श्रीर कम तान स सरहा

#### पार - ३ राडा

मादा टीड्रो रंत म धपन अगट रखना है। यह पहले टोक उसी आकार का एक छेट करतो है जेना गुण्या में सासे का पेंसिट की एक रंच गहरी गाड़ने से बनता है। यह छेट यह अपने अरीर के सीग के समान कड़े पिड़ने डिस्से से करनी



उसके द्वाटे पंख निकलने लगते हैं, परन्तु जय तक यह लगमग एक महीने दा नहीं होता नय तक यह उड़ नहीं सकता। इस समय यह अपनी कँचली पिछली यार यहलता और गुलावी रंग का एक पड़ा सा बीड़ा पन जाता है, जिसके रंग-विरंगे पंख जल्द स्टाकर कड़े और पेसे पेट्रे हो जाते हैं कि यह उनसे एल संबहें। मील हथा में उड़ सकता है। करोड़ों पूरे पृद् की टीड़ियां हथा में उड़तों है और उनके हल कभी-पभी ऐसे यन होते हैं कि उनके निकलमें से स्पर्य द्विप जाता हैं। यह देश भर में रुपर उपर उड़ा करती है और कमी-कभी सेतों में उतरकर साई। कस्ल को खा जाती है। यह रात की अपसर पेट्रो पर और अर्थाहरों में परेरा सर्ता है और स्पर्य निकलने ही हमरी जगह वसी जाती है।

धना धारणी वे जिला में जारी कि सेपूर्ण पृथ्वी जाती वेर्ष जाती है कीर रताला नहा एका यह परवार टीडिया विना कर किय भीर भार नाश हो का का ए एक्तु स्वारतीलें स्थानी में किस पत्रा, राजपुत्राचार्या, किस अर्थाय यह परसाम व चार मारव के नाथ कर हता है कीर जनसे नये है। विरात्ता की किस कर हता है किस पैटा है।

सद मान पारस्थान अस्थानिक सन्धि हा ह्या दार में (इ द्वा प्रसा वर हा रहा रहा र पर हर यह है है से स्थानिक प्रसा वर हा त्या है है है से स्थानिक प्रसा वर होते हैं है है से स्थानिक प्रसार के साम स्थानिक प्रसार के मान स्थान है है से स्थान स्थान स्थान है है से स्थान स्था

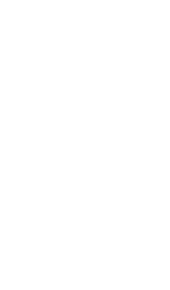


तरह से मार डालना ही उचित है। एक और उपाय यह है कि जय कोड़े पृथिवी पर रॅगते हैं। तय उनको लकड़ी और दहिनों के मुट्टों से या पैरों से कुचल हालें। किसी २ ज़िले में इस तरह से कई हज़ार मन देशों वे पर की टीड़ियाँ मारी गई हैं। परन्तु जय टीड़ियों के पर निकल आने हैं तय सिवाय इसके और कुछ नहीं हो सकता कि यह हज़ा-गुज़ा करके और हवा में फरहरा हिलाकर भगा दी आयें।

जय किसी गाँव में परदार टीड़ियों के आने से हरूबरू मचती है तब अजब तमाशा देखने में आता है। खी, पुरुष, और बचे देगी घड़े लेकर कीर्र तसते दबाकर, कीर्र स्टूर बटाकर, कीर्र गले में दील डालकर, खेनें। की श्रोर दीड़ित है श्लीर टीडियों की डराकर भगा देने के लिए चिल्लाने है, डील श्लीर तसले बजाने हे और हाथ कपड़े श्लीर पेड़ी की दहिनबां हवा में हिलाने टा पना भा टीडियों का पीला करके बहुनों की खाजाने है और इस प्रकार से लेगों की उनसे पीला हुड़ाने में सरायना देने ह

टोडिया कमी कमा जब सबरें सारती होती है जिन्नुकर सुख हो जाती हे थीर जब नक स्पंध दतना ऊँचा। नहीं होता कि उसमें गरमी था आब नव तक उड़में वे लिए श्रापन पर नहीं फैला सकता। उस समय उन्हें पकड़का सक्रियों से या किसी थीर तरह से मार सक्रते हैं। गत की भी श्राप जला-कर पेड़ों पर बेटी हुई टीडिये की जमा थीर बेड़ सक्ते हैं। उस समय यह उड़कर श्राम में अंपड़ेगा श्रीर जैसे परिया दिया की है। में गिरकर जल जाते हैं बैसे ही जह मरेगी।

रनके यह यह उल सन १८८२ व ८६ र० में उल्लेख देश दर हा गये थे सीर उन्होंने बस्यर हाते के एक हिस्सी में अहे



रदेश में विद्या ही आदियंचु है, विद्या ही देवता है और जाफ़ों में पन से अधिक विद्या ही का मान होता है। जेममें विद्या नहीं है यह पशु है।

पान् वेद और इन्तव ह सोतियों की माला से मेनुष्य की ग्रेमा नहीं है। नहाने से और इपटन फराने और पालों के ग्रुपारने से द्वापमा फूलों के ग्रुटेगार से भी ग्रुपीर की पेसी ग्रेमा नहीं हैं जैसी कि केपल पाणी की उत्तरहना से होती हैं। ग्राणी ही मनुष्य का पक पेसा सामृष्य हैं जो अन्य भूपणें के करन कभी पिसता नहीं।

जिस पुरुष के। समा है उसके। क्यम का क्या काम, जिस मनुष्य में कीथ है उसके। कीर शत्रु पया चाहियः जिसके मित्र है उसके। कीपधि का क्या काम, जिसके। पिया है उसके। कीर धन की क्या कायरपवना है। जिसके। तज्ञा है उसके। भूगते। का क्या प्रयोजन है। कीर जिसके। मृत्रु कियन। की शक्ति है उसके। सामने कुछ क्या है है

आरं बेंधु पर बहारता परजन पर ह्या, हुए के साथ गटना, अले के साथ प्रीति राजसभा में लीति, विद्वाली के साथ नरहा, राष्ट्र के साथ प्रीतित हुई लोगों से लमा जा हम्म इन समये नग्नत है जार से लेक की मर्याहा है।

धन्द्री नेतित हुद्धि के व्यवकार की हरती। है, वचनी के रूपा की धारा के सीयती है। मान की बहाती है। वार की हुर बहती है। यिक की अनक रकती। है धार खोरी जीत बड़ वीमाकर अञ्चली के बचा बचा ताल नहीं बहुँचाती।

र्याच्याता को समूत्र ग्रहका, ईसगुख स्थापी सहेही क्रिक, सम्बु सुदुन्दी, विधित्य क्षत्र सुन्तर स्टबर, स्थित सामृत्वि



पाँव के स्पर्ध से अल उठती हैं, तय चैतन्य तेजस्वी पुरुष दूसरों के अनादर को कैसे सह सकते हैं। सब रान्द्रियों भी वहीं हैं, सब व्यवहार पहिले ही से हैं; प्रचंद विक्त भी पहिले ही के सहसा हैं. बचन भी वहीं हैं-

सब इन्द्रियों भी वहीं है, सब व्यवहार पहिले ही से है; प्रचंड वृद्धि भी पहिले ही के सटरा है, बचन भी वहीं है; परन्तु चड़े ही आक्षर्य का विषय है कि विनाधन के वहीं मनुष्य कुण भर में क्षीर का क्षीर ही हो जाता है।

जिसके पास धन है वही पुरुष कुलीन, पंडित, गुणी, पका ब्रीर दर्शनीय समभा जाता है। इससे यह शात होता है कि सब गुण सुबले हो में बसने हैं।

युरे मेथियों से राजा का नाग होता है संगति से तपस्तों का नाग होता है पड़े लाड़ व्यार में पुत्र विगड़ जाता है, विना पढ़े जाहाण श्रीर कुप्त से कुल नए हो जाता है, दुएँ की सेवा से शील श्रीर मदपान करने में लखा जाती रहनी है विना देखे भाने खता का श्रीर परदेश में रहने से प्रेम का नाग हो जाता है नम्रता न रहन से प्रमुत्ता, श्रुनीति दरने से युद्धि श्रीर श्रुमाययान रहन से प्रमुत्त हुए जाता है.

भन की तीन गांत र — दान मांग द्वीर नाश । यदि धन न भोगा जांव कीर न दिश जांव ना भवश्य ही उसका नाश होगा। है राजा। यदि तुम शृथ्यीकरा गांय की दृरा चाहते हो तो प्रकारणी यथुड़े का तन मन धन से पालन वरी यदि उसका पालन होगा तो घर कांचन के समान फल देवा

#### 🗯 धाः हुईन 'सस्ट

लंखायान पुरुष मृत्य सम्भा जाता है अत करनवालः धर्मेडी, पवित्र मतस्य कपटी क्रीर सूरमा निटेश राजा जाता है। मैनियत करने बाला मूर्ल ग्रीर मीडा बेाछनेवाला र शममा जाता है। तेत्रस्वी घर्मडी, यका यक्तपाई। श्रीर

बा गुण बद गया है कि जिसका गुजीनों में फरु है

समने जाते हैं।

त्रिममें सेम है बसे कृमरे अपगुण की क्या आपर है ? ते। इटिस है उसे द्वीर पाप करने की क्या आवर

भूष्य साहत र

लगाया। गुण गीइस जगन् में दुर्जनी के प्रवाद से अ

विशयाला बालसी इस जगत् में माना जाता है। बाय

दें ! सत्यवारी की बीत तप संक्या प्रयोजन है ? मन गृक्ष है उसदी तीर्थ करने से क्या कथिक पाठ बा सञ्जन है उनका धार गुण क्या चाहिए ? यस्त्री ! स बदवर मृधन कान स्थल है ? विशास का कुसरे ? क्या भाषाव्यक्ता है। फिल्मा अनुवर्ग है असकी भी

स्यह भूगवाय रह ना गृता जाना आया है याँ वात करन म तिमुना इर तर वात्ता ग्रीर वक्षवारी काला व वात पाम रह ता लाड प्राट पुर रहे ते। म् जाता है अबि शास्त रह ता सरपाछ श्रीर स रहे ती ! दश कला है। या या पहा काइन है। 'असर' सब दृष्टना प्रकार हा गर है। क्रियक पूर्व करन बन्दरम बन्दर राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र के की समित बाज रा बना र झार धरह गुला स इ.व रखना है,मैं रह राज है सब १६४ से दोब पुत्र कता है " द्र का अवन्य नृत दाव के गाउँ की कृषा है राज मा तान्या का दा हा हा पर पर बच्च वा परती है

परन्तु सञ्चन की मित्रता देगपहर के उपरान्त की छाया के समान है जो आरम्भ में कम होती और फिर पड़ती आती है।

### (४) सुजन-प्रशंसा

सञ्जर्भो की संगति करना, कृष्यों के गुणों से प्रमण द्वाना, गुट से नचता करना विवा पढ़ने में खिस लगाना, अपनी खो से प्रीति करना लेकिनिन्दा से इरना, ईश्वर में भिक्त रखना, अपने के। वहां में करना दुए की संगति द्वाडना, ये सब निर्मेल गुण जिनमें हैं उन महासाओं के। नमस्कार है।

विषात्त में घेर्य रखना धन होने पर त्रमा रखना सभा में बनुगाई ने बोलना युद्ध म एरना दिखलाना यश में शिंख क्षेतर शास्त्र में चित्त लगाना ये सब महणभाओं की स्वाभाविक सिद्ध होते हैं

अपने किये हुए हान की खिषाना घर पर आये हुए पाहुने का आहर करना और वा मला करक खुप रहना आगों को अपने साथ की हुई नलाई की नमा से कहना। प्रन पाकर प्रमाह न करना पराह चला निल्हा राहुन अपना, इन पहुँ रुठिन मनों की सळनों के लिए जिसन उपदेश दिया है

हाथ की शामा दान से हैं 'सर की शामा अपने से बहु का प्रखान करने से हैं मुख का शामा सब बालने से हैं हाना मुजाओं का शामा युद्ध में बारता 'दखाने से हैं, हेट्य की शामा स्वच्छता से हैं कान की शेंभा शास्त्र के सुबने से हैं श्रीर ये ही धनहीन होने पर में सजनों के सुपत् है।

महात्माधा कः । चस धन हात पर कमल से मी केमल



पा श्रीर वह सत्य धर्म और वृद्धि के लिएमसिद्ध या। दूसरा भा श्री तिसका गरा केरर युद्ध करणा यूनान के हरस्यू-

( 32 )

तीज से किसी बात में कम न था। तीसरा श्रर्जुन, जो धमुर्विया में एक ही था। महाभारत की टड़ाई में इसने बड़ी वीरता श्रीर साहस के काम किये। देा श्रीर होट पांडव थे जिनके नाम नकुछ श्रीर सहदेव थे। युद्ध में उनका विशेष काम न होने के कारज थे किसी मुज्य उचीग के कारण प्रसिद्ध न थे। कीरव सी माई थे श्रीर महाराज पुनराए के पुत्र थे। उनमें

प्रसिद्ध चीर दुर्योधन था। यह दुर्योधन स्थरने परम मित्र कर्ण की सहायता के यह पांडची की हानि करने की सदा उद्यत रहना था क्योंकि धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर की युधरात्र यनाने का प्रश् कर लिया था। इस बात से दुर्योधन की, जी महाराज्ञ का जेडा पुत्र था। यहत क्लेश हुआ इन देनों के श्रस्त्रविद्या के शिलक महान्म। होणावाय थे। समय साने पर युधिष्ठिर की युवराज की परवी मित्री कार्यत दिरोध किया। महाराज्ञ धृतराष्ट्र स्थेता थे हा पुत्रो के सममने उनकी कुछ न चली। और प्रनाप स्थेता थे हा पुत्रो के सममने उनकी कुछ न चली। और प्रनाप स्थेता थे हा पुत्र के रियो वा करना

किया महाराज भूनराए अभेता थे ता.पुजों के सामने उनकी कुछ न चली. और अल्ल में उनकी अपने पुत्र केरियों का कहना मानना ही पड़ा उन्होंने अपने पुत्र उपाधन की युवराज बनाया और पाड़वों के विजयान का आआ हो। हिस प्रकार पाड़वों के विजयान का आआ हो। कि पांचाल देश के राजा को पुत्र उ.पटा के स्वयवर होने का समाचार मुनाई पड़ा (स स्वयवर में देश के सब ग्रा चीर पराक्रमी राजा उपांस्थत हुए। स्वयवर का अस यह था कि के केर एक बीस के ऊपर हटकी हुई महली की प्रांड्य तेल में देखकर ऊपर केर तार चलाकर महली की श्रीख में निशाना लगावें वह ट्रीपदों के विवाह का आधारांगी है। ट्रीपदी के विन्त मृत्य बीर स्वबंद की बची बन समय संसार में हैं अर भी सीत क्री कारण कर्ना विवास की सालमा से देग हैंग वीर १४१ में। मरावानी क्षेत्र धरावा धनियान के प्रलाग ह नार केरनगण धार नवे नवे लियायुक्तप्रदीय दिष्य शम भी भागपर में प्रपश्चित हुए। स्थापन का महत्व कर कर गुन मना केल राम करता है।येरी जबबाद लेकर सता में डारि इः । वीतवी के व्यवप की देखकर साथ राजकृतार गीरिय स्य । पर यह अवसात्र दिलका सित र बीटा के अपर बा क कमी बुड मार्जा है। नीच गान म नेवाहर जार बाल के कर भ्रमनाथ ४१ । यर प्रतिष्ठा स्वप्त शिक्ष में स्ट्र en gentur einein einenieb a gebin faati fi कर्जर बजल से करूच रहान से ती सामानी रहें ! हि हैं। इ. ब. ब. एवं का बड़ा जी ज्यार पर कार्यन व्यव पर कार् जन्म सक्ष क्षेत्र वर्षा व्यापन राज्यात सामे व्यक्ति है und mit allen er gett eiten mit teinere Straf Bo ! # THE RECORD A SHEAT A STATE AS AND MADE ASSESSED. # 11 1 At 100 \$ 1 41 A 45 45 A 1 1 1 1 1 1 1 1 THE ACT A BIM SEA & BIT BID SHEET AND er want to the er of the wat the teat the teat AR TIME IN IF I IS A TOP A THE WITH IN Section need to a section of more that the way and admit

- करण के में का रे जान में मर बच्च किए के प्रियोग के कामर बेट में रहा जो प्रकृष्ण क्षेत्रकी नाव जिल्हामा के करते. जे करते जा करण कुछ कुणता की जनमाना की की जिल्हा कामर की बार्य कर बार्य की पुरुष ने धनुष उटा लिया और साथ भर में नियम के अनुसार मधुली को पेथ दिया। भीपदी ने पड़े आनन्द से जयमाल इस पुरुष के मले में आल दी। इस पर कितने एक राजकुमार कुटिलता से पद बाइबर खड़े हो गये कि राजकन्या का विषाह अनजान पुरुष से बाजी होने न देंगे। जय तथा इनकी कुल-मर्थादा प्रवास मा होगी तथा तक यह दीवदी के विचाह के अधिकारी नहीं है। जेत में इस पुरुष न अपने का प्रवासित करको कहा कि में अर्जन आत से से मार्ट खीड़ पांटव हैं। या तथा से से स्वास प्रवासित करको कहा कि में अर्जन और यह मेरे मार्ट खीड़ पांटव हैं। या प्रवासित करको कहा कि में अर्जन और पट के से मार्ट खीड़ पांटव हैं। या प्रवास के प्रवास के प्रवास के पर के प्रवास का प्रवास हुआ।

द्वीपदा का विवास है। जान क जनलार पांडवों से पोंचाल देश के राजा की रश्टायला पांडा भरायल प्रमाण से यह करण भंजा कि पंडाया केया केया के पांच पांच राज्य पेट जाना जीवल हैं। स्थाय का उन्हें के पांच पश्च प्रमाण का किया के राहुड परने पर डालाह रूप का पांडा हमरण पांच सामहर्णा पर जान की पांच पांच प्रमाण के सम्माण देश के राहुड परने पर डालाह के पांच प्रमाण के सम्माण देश



महाराज की यह रच्छा थी कि पांडवों की युलाकर राज्य दें पर कीरवों की कुटिलता खुल गई श्रीर पांडव यह समम गये कि पदि हिस्तापुर गये तो कुराल नहीं है। निदान यही जह महाभारत के युद्ध की हुई श्रीर कीरय-पांडवों की फलह मँ बड़े-बड़े घीरों का होम हो गया। इस युद्ध में पृथिवी के दूर-दूर के राजा युद्ध करने के लिए उपस्थित थे। श्रंत में पांडवों की जीत हुई श्रीर कीरय हार गये। जिस स्थान पर यह महाभारत का युद्ध हुआ था. यह श्राज तक कुठने न के नाम से प्रसिद्ध है श्रीर इस युद्ध का पृगा वृत्तांत 'महामारत' पुराण में व्यासजी ने लिखा है। यह महाभारत पुराण हिन्दुओं का रितहास श्रीर थर्म का प्रशं है।

# पाठ २६--हापे की कल

जिस चिद्वान ने पुस्तक द्वापन की गीत निकाली है उसने अनुष्यभाष या यहा हा उपकार किया है। जब से द्वापे की कल वर्ता तम से चिया का प्रचार दिन 'उन बढ़ता ही जाता है। सब पूढ़ों तो जो पुस्तक पहले बहुत हो मा रा चिक्रती था ने अब मली-गली मारी-मारी किता है। अपन समय मा मानुष्य वड़ा अम खेर कुछ उठाकर जिस पुस्तक वी एक प्रोत महीना में लिखते थे उसकी बब सहस्या प्रज्वा अध्वारों में दुव जाती है। पुस्तवों का पहिले पेसा अभ्या थर कि धना पुरुष उत्तवा है। पुस्तवों का पहिले पेसा अभ्या थर कि धना पुरुष उत्तवा के स्वा पुरुष के चित्र में उनका की धे पुरुष से धनी पुरुषों का छीट स्व धनपट रह जात थे पुष चित्रा के स्थे पे प्रकाश के आगे 'उन पर 'उन प्राचा का अभ्यवार घटना बढ़ा जाता है। पहले पेरस आक्रमक है



स्याही लगा उस पर केारा कागृत रखकर वेटन फेरते थे। रस प्रकार की छुवा में पकयड़ी भारी हानि यह थी कि एक लकड़ों का टप्पा पक ही पुस्तक के छापने के काम में आ सकता था और जब रूसगे पुस्तक छापनी होती थी तब नया टप्पा पनाना पड़ता था। सन् १०४१ और १०४= ईसवी के वीच जीन देश के एक निवासी ने अलग-अलग अलर बनाफर छापने की गुनि निकासी। परन्तु जैसी उनके स्वान में स अब ईंगरेज़ों ने की है वह स्वय में भी उनके स्वान में स

सन १६=४ रें में यूरत में भी तकड़ी के डाये द्वारा पुस्तक का द्वापना प्रचानत हहा। चिहानां का मत है कि प्राप वालों में पर विद्या चान वाला से साम्बं सन १३३६ रेव में स्टास-दर्ग के नियासा ग्रहनदर्ग ध्रय हमलेब लगर के निवासी कास्ट्र संश्रद्धा व ब्रह्म इसका स्वाहर छाएन की लाला कियानी प्रस्त् र्तर्तात स्पाप्ताकाकात प्रकार रागा का निश्चय नरा हुआ। यहुआ विदान गणनदर ६ इन ए १ दा तेकालन क्षा ब्राफ्त हुन है। यह सहस्र कुर च्या १ व १ व व व व कर का पद्रा इस कारत प्रदेशका यह इस के मान ते अहाना साहता १९ व्हत्य भी सद्य व प्रयुक्त । ह का कार का स्था सामक्षेत्र १८६१ को अब १ अवस्य सामक विकार स्थाप क्रिया । वर्ष भागा चित्रसञ्चार का १ तमा १९ जिस्सी १ । १ असदे वृत्तका द्वार राज्य रक्षा कर्षण करिया । केली की रिवेसी TREE REPORT OF THE PART OF THE PART OF agin igus eann ፍ ነው ነው፤ ብዱ <sup>ቀ</sup>ች ነው።

•



एक यद्दे पजाज्ञ की दुकान पर काम सीखने के लिए गया था। **पर १४४१ में उसका स्वामी परलोक सिधारा श्रीर उसके** लिप गुरु धन हे।ड़ गया। कैक्स्टन ने उस धन की लेकर म्पीपार में छगाया श्रीर यूरप में यात्रा करना श्रारम्भ किया। उसने रूस समय में अनेक भाषायें सीखों श्रीर कार्यस्तकों का उल्पा करके छुपषाया । सन् १४४६ 🕏 में या उसके लगभग षसने १९(लिस्तान में लीटबार लंडन नगर में घेस्टमिनिस्टर प्रवे नाम वे गिरिजाघर वे पास एक छापाखाना खाला। अनेक मनुष्य उसकी सहायता पर उचन पुण कीर उसने ६४ वस्तके ह्यपार्ध । उसके पीर्द उसके संगी साधी हसके हायेखाने का चलाते रहे द्वीर पाहे उन्होंन पेसी यसी उन्नति की कि हजाई उत्तम और गुद्ध हान लगा। सन् १८५१ और सन् १६०० हे र्वाच ,वालस्त्रान क्षंत्र स्वाप्त्य स .. ५ द्वापाखाने हा ग्रं द्वीर रहणनम्बद्ध रक्षा प्रत्य । ए गर्च सम्बद्धान्त दावन का काम 'दन 'दन बदना ही गया। सन ११ .४ स १६०० त्रव अधान चेंदर राम म 👑 नर पुरत्र 🤫 प्रा प्रशासित दुर । अन्य । १० तव न्यू प्रस्तवी का सरका रक्षा त्रव पहचा असाध झान राज हे व ापन बा यांक स (प्राप्ता विकादन विश्व प्रयोग क्यांत्र र र । पुस्तका हा दाम भी पटन बस सब ध्रा । या । जन ६०० व वह हम स्वयं क्षत्र , ए'लानान हैं से १००० से होते स्वयस द्वापन व व मासासस्य हुव ह छ । । ८८८ स्ट द्वा ३४ साम्ब् प्रस्तिको का प्रस्ति वाध्यत का व अवश्वात । द्वा हार स्व वृत्तवुर नियांत राजा र

पाळके से प्रशाह बहु है। स्मार बा उप भारता है। प्रशाहन पाछ समझा स्ट्रेन्ट्रीय स्मार्थ जे देन च १० अपना प्रा ने इन कर्लों के। कुछ सुधारा था। य<u>इ</u>त दिनों तक समाव पत्र छुपने रहे, परन्तु शीघ्र यहुन सी प्रतियों न छुपने के क बहुत लाभ न हुआ। इन यत्यों में हाथ से काम क पहता था, इस कारण प्रतियाँ शीघ न छपती थीं। नय सन् १८१४ ई० में कैनिंग ने टाइम्स नामक समाबार निकाला को केंबल पानी की भाष की शक्ति द्वारा क<sup>र्य</sup> छापा गया । पेसे लाभ-दायक यन्त्र के निकलने का यग <sup>हैं</sup> ही को मिला। इस यन्त्र द्वारा एक घंटे में ११०० में पक श्रोर छपती थी। इस यन्त्र की कुछ कीर टीक <sup>व</sup> पर इसके ज्ञारा १८०० प्रतियाँ एक ग्रंट में एक होता लगी। सन् १=१४ में कैनिय ने एक और नया यन्त्र विव जिसमें वक घरे में उद्देश प्रतियों देशों श्रीर स्वाते ह इसई अनन्तर कृषर क्षीर प्रितंश ने पक्ष श्रीर भी । यन्य निकाला जिसक द्वारा यक ग्रंट में १४०० मतियों लगा। कुछ दिन पीट्रे दा आदि अनेक शिल्पविष कुमल प्रयान उन यन्त्रों की पेसी उन्नति की कि स यन्त्रद्वारा वक यह म मालह हतार प्रतियोद्यपनी हैं। मा टाइब्स नामक समाचारतव की एक पेट में बच्ची द्वारा है प्रतियो द्वता र ।

हुमगी गिंत ज्याद द्व बातगों की पत्था गर के शुर्वन की दें अपूर्वेत्व तथा के एहतवाले संबद्धिकार के या शुर्वन को गांत जवाला भी शिला के महिता संबद्धि सार्व्य कथल पर के बाम बाल से खुबता द्वीर करते हैं का जियान ने दलकर पुम्पक की रचना बर्बों होंगे के ने हमा गांच पत्थनक करणा तथु करता होगों द्वीय भग ने पर स्थान ने तथु द्वीर किसी ब्रकार से भी कोर् सहत उपाय सोचने लगे। पहिले ये तौवे के पत्र पर मोम, सायुन द्वीर काजल की स्याही पनाचार लिखने लगे। मृखने से यह स्याही ऐसी कड़ी ही गई कि शोरे के तेशाय का मी उस पर कुछ झसर न हुआ। नांवा यहुत महँगा होने के हारत कथर कर किसी प्रकार से तिखने का उपाय सीचने डगे। घ्रचानक उनके। यक्त देमा पन्धर मिल गया जिसमें विकनाई द्वीर स्वाही सीखने का गुल था। एक दिन साहव को उनकी मा ने धारी का हिमाव लिखने के कहा। साहब के पास उस समय कागइ न था। यह विचारा कि लुट्टी पाने पर कागज्ञ पर इनार ='बा, उन्होंने बनी हुर स्वाही से हिसाय की पायर पर लिख लिया अब एक प्रति उन्होंने कागञ्ज पर बतार ती तद दे उपोही दश्या का हमाब मिशने की थे कि ब्रह्मसम्ब उनके मन में ब्राया के देखना वाहिय कि उसकी अब वृक्षरा प्राप्त इतर सङ्गार 'इ तर' पार्ने उल्लेंसे क्षा का केलाद लगाया कि जिसमा पाधा उसके द्रमा से पिस तथ द्वार अन्तर उसे राका उसरार प्राप्त सेसन से माही लग कर कारत रखका नावा । ताव त्यों का हो उनर सार् यह दाव लें। या मन्द्र उनके। हुद्धा उन करने में मना द्वा सकता। कर दराजाची के गांव अता का बाता हरण खबलाह म विशेषना त. इ.धान काला का 'न ६० ( तर) जम सहला। त्र उन्होंने देशा दर यह रहे हात है है है। जिल्लाका उसके सहके पर उसे पाना से थाका थे। या प्रे फेक्ना न्यान का बेलन करा। प्राप्ते कता साधान सा बदव क्षावर कर स्पाही हमा जाता थी। द्वेर प्यतः जिल्ला पेथर साफारहरू धा कैस कास का दा हापन से क्षांत उससे प्राप्त इतर क्षांत्री थीं। नेताद से पाधा के कारका याना के एका करने की



## पाउ २७—**पै**जमिन फेंकलिन

यंज्ञीयन प्रकारिन समेरिका में एक यहा उद्योगी पुरुष हो गया है। यह केवल अपने ही पराफ्रम और प्रयक्तों से योग्यता की पर्युचा। उसके आदि अन्त की इसा मिलाने से निर्वय होता है कि हस्ति। भी उद्योग से धनाटन हो सकता है। यह निरा हस्ति। होने पर वंसा वड़ा विद्वान और सम्यक्तियान कैसे हुआ, जो जो संकट उस पर पट्टें उनसे कैसे उसकी सुटकारा मिला, उसकी क्लिंक कैसे फैल गई हन सब पातें के विद्वार करने से बहुता की उसका या उद्योग करके पढ़ने का

प्रकासन उन्हां क्षामिका वे बास्टन नगर में सन १,७०६ई० में बनाप हुया था। उसका थाप धीम धरम पहिसे शिस्त से स्मारका में अध्य धारा था। उसका पुरुष्य बेका था। से स्मारका में अध्य धारा था। उसका बुद्ध्य बेका था। इसकाथ पह समस्य कर सम्बन्ध था। यह बादमान केश बंधीयी था। साथ कायन सहक वा विद्यान धरान में बहु बुद्धान था।

प्रकृतिक के एहं भीर ने 1% गण्याका से का उस समय प्रकृति के प्रवृत्ति के 10% ए हरिया का प्राप्त के प्रवृत्ति क



लगा श्रीर खुर्च के बन्धेज से घीटे-घोरे उसके पास कुछ धन रकड़ा हो गया।

संहन में डेढ घरस रहकर फिलेडेलफिया की लीट आया द्यार फिर धपने पराने स्वामी के यहाँ नीकरी करके पहुत सा रुपया कमाया। उस रुपये से उसने एक नया द्वापाखाना माह हिया और वक समाचार-पत्र निकालने लगा। इस नमाचार पत्र के बाहक चारी धार हा गये धार उसकी प्रतिष्टा दिन-दिन बढने सगी। सम्पत्ति हाने पर भी उसने श्रपने च्योहार में तनिक श्रन्तर न पड़ने दिया । यहचा ऐसा देखने में द्यावा है कि जा हीन दशा से उन्नति पाने हैं. इतराने श्लीर क्रीरें के। तच्छ समभने लगते हैं। परन्त फ्रेकलिन ऐसा न था ज्यां ज्या उसकी बढ़नी होनी गई न्यां न्यां श्री मध हाता गया वह यहाँ तक निर्माममानी था कि बाजार में कागत माल लेकर गाडों में रखकर आप खींच लाता था। इड दिन पीडे उसने **श**फ्ना विवार किया । उसका स्त्रो शीस-स्वनाव की अर्ल्डा थी इस कारण उन दोनों से वड़ा बेस था। उसमें पत्र यहा प्रतकालय साधारण लेगी के समय खेरता 'जसमें से चन्दा हमेवाने' है। प्रत्ये दखन का मिला करनी था । अमेरिका संघट पाहला हो पेनः पुस्तक उस धा । उसने दि वे ट्वेट्य अर्थान् पन उपजन करने का सागे। नामक ण्क पुस्तक रचा सम्पष्टक का उमादश से बडा विकी इंड स्मन १८३० में बहु गांव के कामी पर ध्यान देन लगा -इन दिनो पुलिस की धवस्था अन्तर न थी, उसके सुधार के लिए वडा प्रयत्न करके सरकार से उसने श्रच्छा प्रयन्ध कराया उसने आग से हानि होन का दीना की कश्वनियो खड़ी करन के लिए लोगों का उसाग और यह परिश्वम से शाखाध करने



मेंक्सिन क्षेता विद्वान था धैना ही स्वदेश हिनिया भी था। इनी कारण उनकी प्रतिष्ठा पेसी बडी कि राज सम्बंधी सभावी में उसकी करसी मिलने लगी और उससे भी सिण और विप्रत में अनुमति सी जाने सभी। अमेरिका के निवासी धैन-रेजी ने स्वाधीन होने के लिए शिलेंड से यद शासन किया। इस समय उन्होंने घेजमिन है। फ्रांस के द्राधार में भपनी श्रीर से प्रतिनिधि पनाकर भेजा। उसने पटी जाकर अपने देशवालों से फ्रांसवालों की मित्रता कराई इस कारण फ्रांस श्चार श्वलंडवालां में यह दुशा जिस समय फ्रेकलिन फ्रांस देश के पेरिस नगर में रहना था। इस समय वक आवरलेड नियासः जा वहाँ रहता था यहा दृष्टमा से था। उसने प्रश हारा प्रकालन संकुछ सहायता चाही। प्रकालन ने उसे निखा कि पेट हैं साथ इस माहरा का हुए तुम्हारे पास अजा जाता है य माहर मन नुस्त दुनही हाला है जिल्लानम इनके। उपार समसे । आशाहाक त्र त्र त्र अपन दश लाट जाश्रीमी तरहारा जीविका वर दिक्त हो हो अथमा श्रीर तुम धपन प्रशुण को चुका सङ्गण । १७ ना साम ३ हान पर जब तुम किसा प्रथ हो। एसा ध्वस्य 🕮 ३छ। तैसा ध्वस्या में तुम श्रवहा तव उस य मात्र टउन द्वार अस नामन ज्ञानम्हेलाखा हे जन दना प्रश्न करन स्तर स्त्राहा जान्नाम अचारता हाव द्या गात सहस रपय स बहता का काम निकल म बड़ाधना नहह ने। नाधे। इहा प्रस स जहां तक यन यह हान अध्यया के अकर करना साहता हें धर्माला मन नमक यर पत्र क्लाबा ह

श्रत में इतलड श्रीर श्रमारक वंदर में सान्ध हो गर् जिसस श्रमरिक, बात स्वतन्त्र हो गरे । इस सार्त्रण लग



हत्तें उन्हें पत्यरों की पटियां मिल जाती थीं. उन्हें कहु। करके रक दूसरे पर रखके द्वाटा सा निवास-स्थान बना सेते थे। क्षी प्रकार धोरे-घोरे कोपड़े बनाना सीख गये श्रीर यहुत काल के पीड़े श्रन्डे सुडील मकान बनाने लगे।

कोई-कोई वृद्धिमान मनुष्य कुछ काल पीछे धातुओं को मी काम में लाने लगे. जिससे उनका और उनकी सन्तान की पहत टाम पहुँचा। जय उन्होंने देखा कि पत्थर के दुकड़े और नर्म इधियारों से काम नहीं चलना, नव और कही धानुओं से हथियार बनाना सीखा। इस पर अनेक प्रकार के धातुओं को इंड-डांडकर निकाला और बनसे काम लिया। बहुतों का यह मत है कि हो नहीं साने ही की चमक-उमक पर माहित है। के मनप्प ने उसके पराधं पनाये हो। तांवा भी यहन दिनी से काम में आने लगा है फ्योंकि यह धातु भी सुचर्त की नाई भकेली मिलनी है भीर नमें श्रार लचीली होने के कारण उससे सय प्रकार के मनमाने पदाध बन सकते हैं। जहां अस्ता मिल सका वही उसका तांवे में अमलाकर पीतल बना लिया। फिर इसे गलाकर कथर या 'मट्ट के साचे में ढालकर किसी प्रकार के तथियार बनाबे गये। यह राक रोक निश्चय नहा द्देशना कि कथा वे हाध्यारी ३ कतने बरस पाँदे पातल के हथियार पनाये जान हमें यहुन समय दीतने पर मन्त्यों ने सारे की गहाकर साम करना साखा। दय रसे गराकर दाहते हमें तब होई से पावह का श्री निया गया। इसकी बही तलवार बुदाली आहर धर पतल ह पेर धार आसुपल आहे यनने समे : वाँदी धार सामा उनके पाँदे काम में आपे

प्राचीन काल के मनुष्य घूमा करने केंद्र मृत फल खान और अपने अहर के लिए किसा बहान या पेड़ का ओर में बंट



सार ब्राइना ब्राइना प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्थान स्थान स्थान प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्थान स्थान प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्थान स्थान प्राप्त प्राप्त स्थान स



# षाठ २६---दिसी

पर नगर यमुना के पश्चिमी किनारे पर दसा है। महा-भारत से जान पड़ता है कि सबसे पहिले इस नगर का महा-राज गुधिष्टिर ने बसाया श्रीर इनका नाम इन्द्रमस्थ रक्खा था। श्राजकल का इन्द्रमस्थ देहकी के दक्षिण है। श्रव सी 'पक स्थान पर एक पुराना किला बना हुआ है जिसके। ''इन्द्रपत'' कहते हैं।

महाराज युधिष्टिर के मरने के पींछ तीस पीट्टी तक उन्हों के वंशवाले राज्य करते रहे। इसके पीछे अनेक वंश के लोगों ने हज़ारों वरस तक राज्य किया, श्रीर अन्त में राजा दिलु हुआ जिसने कुनुवमीनार के पास नया नगर वसाया श्रीर इसी से घह नगर दिलापुर अथवा दिलों कहलाया। राजा दिलु वालीस वरस राज्य करके लड़ाई म मारा गया, श्रीर उसके पीछे ५६२ वरस तक दिली बजाड़ पड़ी रही श्रीर राज्यानी न होने के कारण उस समय में पेसी तुच्छ गिनी जानी भी कि चीन देश के नामी बंद्ध वाशियों ने अपनी हिन्दुस्तान की वाजाशी की प्रत्नकी में इसका नाम तक नहीं लिखा।

सन अध्देश में या इसके लगभग तामर यंश के पहिसे राजा अनक्षपाल से, जिसका दृसरा नाम विलानदेव था, दिल्ली के श्रपनी राजधानी बनाया। इसके वंश में कई राजा हुए श्रीर यह २०४ वरम तक दिल्ली में रहे, श्रीर पीड़े से श्रपनी राजधानी क्लीज की उटा ल गये। संवत् ११०६ में के तामर वंश का सालहर्षी राजा श्रनक्षपाल रार्टर राजपृतों से हार

लोई की कीला पर जा कृतुवसीनारक पास है यह धत्तर नागरी स लिखे हुए है----'संबत देहली ५१०४ धनद्वपाट वसी धर्मात् सबद १९०६ से धर्मासन १०४२ है. से धनद्वपाट ने देहली की बसाया।



गह चैंदा है। इसके बीच में यमुना की नहर बहती है। नहर के दोनों श्लोर वृद्ध, श्लीर वृद्धों के पीढ़े सड़कें हैं। इसी चीक के पास जामा मसजिद ऊँचे टीड़े पर पनी हुई है श्लीर देखने के बोग्य है। मसजिद की दो मीनारें १३० फुट ऊँची लाल पर्यर की श्लीर संगमरमर की पनी हुई है। इनके ऊपर चढ़ने से सम्पूर्ण देहली श्लीर यमुना की श्लीरा देख पड़नी है। यह मसजिद हु; बरम में बनी थी श्लीर दस लाख रुपया इसके बनाने में लगा था।

किला के भीतर जातकर्त वादघाद ने महत् वनवाये थे। इसमें दरवार करन के लिय दीवान ग्वास य दीवान श्राम बहे मुल्टर वन दूप है दीवान श्राम में तक सिहासन रूम फर केंबा स्वामरमा के कियो विद्यान श्राम में तक सिहासन रूम फर केंबा स्वामरमा के कियो है। इसके पूर्व में दीवान खाम है। यर निरा संतमरमा का है और इसको दीवारों श्रीर सम्भी पर बहुत से मनाहर के उन हुए हैं हमा दीवारों श्रीर सम्भी पर बहुत से मनाहर के उन बहुत हमा सिम्म के सिहा दीवार के सिहा दीवार के सिहा दूपना राज करने के उप हमने में दीवार खाम के सिहा श्री माना मन जह र क्षेत्र इसके में मना हुआ वादशाह का महत्व सीर उपवान हमा सर्व है सिहा सीरों के रहने के लिए पारव पराइ हाई

देत्सी संग्यार माल का दूरा पर कुत्रमानार की लाट है। यह लाट प्रांध की सब लाट सं उचा है। यह लाट प्रांध की स्वान्य में सात खन की पना हुए थी। क्षण त्रमंग्य सं पात उचा था। परन्तु सन् १२६०१० में उसके उच्च २८ १८ १४ पर प्रांधना संगर पड़ा। फीरीहराह ने उसका पांचवा खन नय पने से पनवादा की र लाट की मरम्मत करवा दो थी। सन १८०० में बुत्यमानार के उपर का पुत्री विर गई कीर कुल मानार नुकर्य के कारण



भी है जिसके। अलाउद्दोन ख़िलजी ने बनवाना चाहा था, परन्तु किसी कारण से पूरी न हो सकी।

स्ती लाट के पास पक पड़ी लोहे की कीती सेल्ह रंख मोटी घरती में गड़ी हुई है। घरती से ऊपर इस कीती की उँचाई पाईस फुट है। कीतगहम साहब लिखते हैं कि निध्य नहीं हुआ कि यह कीती पृथिषी के नीचे कितनी ट्रा तक गई है। पक बार खुव्यीस फुट नक घरती खोदी गई. परन्तु कीती की बढ़ का पता न लगा। यह कीती राजा चन्द्र की पनाई हुई है और सन्न ने लिए उनकी अमर कीर्ति का प्रकाश करती है। कीती पर अनेक खुदे हैं। उनसे यह सब विदित होता है। आंकों का अथ यह हैं

जिसका यश मुक्ता पर खहु भरा लेखनी से लिखा हुआ है जिसने वंग देश में अपने शब्दों है समृद के युद्ध में पार यार पराजित किया। जिसने सिन्धु नहीं के समृद्ध को पार इसके पाल्दिकों की लड़ार में जाता। जिसने पश्चिमी वायु आज तब दिनिण समृद्ध की मुक्तिम्प्त कर रहा है। जिसने उदास होकर रस पृथिया के। लीड़ स्वम में बास किया, जो अपने सुक्तों से पान के को दें कि समें गया है। परन्तु यश कर से पृथियों में स्थित हैं जिसके प्रचल्ड प्रताप ने बन की शाल आने से सर्थ पृथियों में स्थान है। जो किया के स्वा है हो हैं। जिसने पर अपने मुजन्य के के नाश को किया है जिसने हम पृथियों के हो साम किया है जिसने हम पृथियों है। जिसके प्रचल से उपाजित अनुत राज्य बहुत हिन किया है और जिसका मुख पृथिमा के चन्ड़ के सरश हम रहा है— पेसे चन्ड़ नाम राजा ने बिक्तु में स्थान घर विक्तुवहारार में भगवान बिक्तु की वर भवज स्थापित की है।



ंदिश से निकल्या दिया। यह अजनेर चला गया अहीं स्वकायडासम्मात हुआ।

खहराय कवि है। शाहबदा यादशाह के समय में हुए थे. इस हीती का बुचान्त श्रारही लिखने हैं। उनका मत यह है कि स्वास गहाल ने तोमर बंश के प्रथम राजा अनुहुपाल की एक पशीस बहु रू रम्बी कीती दी बीर उनसे कहा कि इसके चरनी में गाष्ट्रिये। शुभ संवत् ५६२। सन् ५३४ ई०) में वैशाख बरि तेरस की राजा ने इस की ली की पृथियी में गाइ दिया: तय व्यास ने राजा से कहा कि भव तुम्हाग राज्य श्वयत हो गया. क्योंकि यह काली शंपनाग के माथे में गड़ी है। जब बाह्यत बला गया तब गञा ने उसको बात का विश्वास नकर की सी उखह्या हाला पर देखा ने उसम लेग्ह लगा था राजा ने हरकर उस ब्राह्मण का फर ब्लबाया द्वार कीली की फिर गाउने को पाक्षा हो परस्तु कीला उत्ताम हो बाहा स पृथिवी मे धमा और दोलों रहा। त्रा ब्राद्धण न करा कि तुम्हारा राज्य रम कीती के सरग पान्धर रहत है। अलामवा पाटा के पीने चे।हानो के राध जायगा प्रार उनक 🐃 मुस्यवसान राज करेते. पेसा ही हुआ। देशर प्रमहत्यक 🕆 💖 अपन्य स्थलाम पार्ट कहा गाउप रहा। इत लाग यह भा करत र 'त पन काला के हासा

रह जाने से इसका नाम एवं का एन प्रश्ले पढ़ गया प्रिज्ञों से अनक नाम यान येस सन्दर और अनुद्रम बने दुवार डोर सारे सम्मार माण्यास्त राज्य किया जाप के स्मार माण्य का प्रकार के समय प्र दुमायुंका अकदार करवाना पार और के स्वस्म प्राप्त का अवस्थित करवा करवाना पार और के स्वस्म प्राप्त का अवस्थित और स्थान करवाना पार आगाय प्रवास करवाना करवाना करवाना करवाना सार्थि अने करवान करवाना करवाना साथि अने करवान करवाना करवाना साथि अने करवान करवाना करवाना साथि अने करवाना करवाना साथि अने करवाना करवाना करवाना साथि अने करवाना करवाना करवाना साथि अने करवाना करवाना



मिलेगा ! क्या सामा-पहिनना आपके क्येन से अधिक सुखरायक होता ! जो झाप मुके होहें भी हा में आदहा हुई स्याम नहीं सकती। जो फिर कमी आप पैसा यक्त करेंगे दी में अपना प्राप्त तल हुँगी। यह कह दमयन्त्री अपने हायाँ के रिया के गते में डालका एक पेड़ के नीचे की गई। सहा मन में सोखने लगे कि जो रवी राजमीन्दर में फुलों की मेंद्र दर दरबर पांच रखना थी। यह इस दुर्गम यन में काँटों के ह्यार क्योंकर सह सहेगी। संतासय दुख सह ल्या दरहम प्रारम्यारी है। इस वियान में धेसे हम्बेग पह मुक्ते कमी न शिक्षेत जा महास पर देश है ते पर विसी न किसी प्रचार चापन 'प्रमा व या सामा अध्या निवास यह साम विवासकर इस समाना सुमारमा होत वामयमा का उस पेष्ट क्षा मान्य गोरहकर ६६ द्वाप नाम गाँउ । मान्य क्षा चाम ब्रह्म क्षण्या प्राप्तिम के स्था । एवं कि ए । प्रवृक्त के पहिल् क्षाप्रते प्रति दस धा प्रकृति धार्मित उप हर्ष । अब विकास के का है नव सर सर सर राज्य है। कुरू के कर हा किराम अब राजा नव न यार १६ १०० मा वा देश होता । इर क्वर साथ या राज्य १४ ००० १०० १०० साथ शरीर कर एक राज्य संस्थाद की रहा ते हैं जिसन है। मृत् प्र प्राथव गाँध मा था देखन १३१ ना १ मुल स्टास्ट publication at a

াবহার প্রহার গোপু বু বিহার গাই হিছা বহা নার বুং আছিল বুলা কা বুলা আছিল হাম কা ইয়াবা চুলা ক্ষেত্র আছিল হুগা বহার কালা আছি কাহিছা আমি বাং কাং বুল আনুহা বিহা হাকা কালা হাম হৈ বাহাৰ বুহুগাকা শুক্তি



मैं।र वहाँ के राजा को रानों के पास दासी पनकर रहने छगी। मंचीग से उसके पिता के भेजे हुए ब्राह्मण हुँ दुते-हुँ दुते वहाँ का निकसे क्रीर उसे पाकर विदर्भ नगर में से गये।

राजा नल उसके विरद में व्याकुल भूमते-फिरते अयोध्या में या निकले और अपना नाम बाहुक रखकर वहाँ के राजा भृतुपर्य के सार्थि वने । दमयन्त्री के पिता ने नल की खोज में नगर-नगर गोय-गोव ब्राह्मण भेजे। उनमें से एक ब्राह्मण अयोष्या से यह समाचार लाया कि याद्वक नाम एक सारधि को राजा प्रानुपर्ए के यहाँ है इमयन्त्री का नाम सुनकर खाँखों में क्राम् भर लाया । यह ऋषने की सार्गीय के निवास क्रीर कुछ बहा कहना यह सुनते ही उमयन्त्री नाष्ट्रगई कि है। न हा मरा स्वामा राज्ञा तल वहा है। यह संख्य विचार अपने प्यक्ता से प्रार्थना का प्रजन्म बन्द व जा ससेत ने राजा तल कासुरु। पाय न पान पान अधारमध्यान कपने पितासे कर्षर राजा श्रुववर ह पाम धर राज्म महधाया कि छह राज्य नत् के 'सनन का वृद्ध के वा ना है देख' ना क्रियें हम बन्न व तुमरा भ्ययन्त्र राजा का एउटा पाव यहा श्राह्ये. स्वर्धात "नद्या सक्रात्त्रः । १ देन राज्यात्रस्य ह हांबाच हार्य हा पनिवार सार ११३ सा विस्मानक न पहुँच सक् । ५ मत्र १६ ११ । ५ । ३८। संबर्ध्यास्य हे । सङ् प्राप्त । यह व घरणाय वि राम व स स प्राप्त देख पान्य स्दर्भ । यह ६ व सम्बद्ध मेर्स में भहार है से कियुद्ध बाद्य te ent te er eine bil aleite fraut eiten au gen Fr. 48 412 111

नरान पर राष्ट्रभ व भनुसा सरका । एत स



पड़ने पर मनुष्य की भिति ठिकाने नहीं रहती। इतना कहकर तरु पित रोने रुगे।

केरिजी ने उनकी द्या देख यहाँ से जाकर सब समाचार देमयन्ती से कहें। सुनते ही दमयन्ती ने जान सिया कि यहाँ मेंग स्वामी राजा नल है। केरिजी से यहा कि फिर मूं उनके यास जाकर देख कि ये क्या कर रहे हैं और मेरे लड़के रहकी को मा अपने साथ सेती जा। अप ये सब राजा नल के यास आये ती लड़के रहकी को है खा राजा नल को। सिता से सिय की घारा यह वहीं की देख राजा नल को। सिता से सिय की घारा यह वहीं की देख राजा नल को। सिता से सिय की घारा यह वहीं की देख राजा नल को। सिता से सिय की घारा यह वहीं की देश नल देखी है। यह की सिर्म केरी है यह दिन से मेने उनकी नहीं कि देखा है। यह देखा है। ये अनाय आज नल के लड़क है। यह सिर्म देखा है। यह है

हा आग्रेमांगे. इत यायेड्रो से अब तृद्ध क्या बात है। जि तमसमी हाथ तेव्हक बेल्ली कि आपके जुलते के राजा पातुक्य के पाता स्वयंद्य का पत्र क्लियावा था। औ पितार दूसने विचान का नहीं था। नहीं तेव चतुन से पत्र दमी बाते। सो जीता। पी कि बाज चाय से भेट न हीं ना में चाल स करकर सर नाइसा। विज्ञान यह पत्र समानार राजा सोससन कील प्रदूषी

जानता है। पतियता स्पी अपने स्वामी का अवगुण वास् भी वसकी निंदा नहीं करती। तुम ते। कल किसी दूनरे के

ताम नहिंचे । सम यान का सनकर न नहुम प्रमाप हुये। प्रा मृतुर्यान न नार सामान का कि तहराइत । मुस्से बही में हुए कि अन्नान मन चायका नार्माय का का स्व रहा में स्वराज का साम क्षा की मित्र पर करकर संयोध्या हो सा गये। तीमान न राज्ये नार तकर कि तार क्षा किया निया रहा की न जाये । मार भी मित्र की हक्यों का हा रहि सरस्तु मार नार्माय मार का मित्र मार किया की सामान रहा में नार्माय मार का महिला का स्व राज्या की सामान ने सामान रहा में नार्माय में तही है किया है सी मार ना सामान मार सामान स

निया देश का विद्यादियां द्वार दमयमा का घरन पास ही स्वर

राजा नल ने निषय देश में पहुँच श्रपने भाई पुष्कर की कुलाकर यह कहा कि एक पार हम-तुम फिर चापक खेलें; में हरू हैं तो तुम्हारा दास होकर पहुँ और जो तुम हारो तो मेरा सारा हारा दास होकर पहुँ और जो तुम हारो तो मेरा सारा हारा हुआ राज्य केर हो। अब की पारी भगवान की पेसी दया हुई कि राजा नल जीने और पुष्कर हारा और मारे डर के कौचन लगा। नय नार ने समभावा कि इसमें तुम्हारा प्या श्रपराध है वह सब अपने दिनों का फेर है। जिस प्रकार पहिले काम करने थे उसी प्रकार करने रही। फिर नल ने हमयना की सार से वह सम्मान से समार से करने पास बुल्या लिया और पह पहुन काल तक सुख-ईम करने रहे

## गाउँ के शासाधि - धं राष्ट

संग्रह का अपरंग	Aller and the second
EGG1 6++ E	रः स्थः र स्थ
17 - A'P	್**ಆ ∵ ಃ
fare in the .	P. S. S. B.
112 01	
द्वाप ्राञ्चन प्राप्त	* C * * * *
210 41 K 6	* **
ξ <b>ξ</b> 1 52 ξ ξ Ε 1 7 7	u + tt ge
एक इन्हें से क <sup>्</sup> रा	THE BUT N'E PTE ; .
संज्ञद करावा र अस	60 F 3 CE E-20

च्च व सञ्च **र**िष्ठ की श्रद्राहर छन्छ ।



मनिश्च = परिदाल्, शहरा

मान ≔ याप

गेंद्र = घर

मृनु = एड्बा

गुग्ना = दहाई

द्वारा = म्दा

जे जा में धम ने चिविच , विधा धन चित लार। मञ्जहि बहरि सुजान ने मुख पार्वे मन भार ॥१॥ धम से विद्या चार्य धम ही से धन है। थम ही से सुख हेल हे धम विन तहे न के हा ॥२० धम ही संद्यापकार पृति तत्त मनत प्रधिकार । यिन ध्रम कारत हाय नांत ध्रम स द ख नसार् ॥३॥ धर्मा प्राय स्थापत लगा प्रमास्या धर धाम धम ही साथ अग्रसा अपराज्ञ अपनाम 😼 धास काष ह पारा पह स तथा तरात शाह नैस्यारण श्याम दल २०११ मध्य ५५ 🥫 भूत्राध्यानात करतत् क्राध्या उस चात् करित दुखा पान कराम संस्थान यह धन यह रहताह १ कार क्षेत्र है में देश के एक प्रमुख्य होता CC 122 4 4 4 56 2 6 4 6 4 4 4 4 4 5 1 5 NIGHT BEET OF AT BUILD IN NICHT HELD AND क्षात्रम् स्व (देव) 👉 सम्बन्धम् । हर्गमः ह क्रात्रम में विष्युद्ध हो है है है है स्वार् भ्योगस्य प्रतक्ति एतः १ ५ सहः ८ ४५ ३ WITH P. SECOND SEC. S. SEC. क्राप्त का संस्थात । संस्थानकार करें कि







क्षमा खद्द लीने रहे. खल की कहा पसाय। भगिन परा तुन रहित थल , आपहि ते युक्ति जाय ॥६॥ कहाँ रहे गुनवन्त नर ताकी शोमा होत । जहाँ धर दीपक तर्रा . निर्द्य कर बदोत ॥१०॥ संबद्ध सोई जानिये रहे विवति में संग। तन हाया ज्यें। एवं में रहे साथ रक रंग ॥ ११॥ दृष्ट हो द्वार पर ताकी पर विमार। कारि वहीं ही रासिये जारि कर तेहि हार ॥१२॥ धन कर तेर है। धेर की राज पर समाय। कर में कायन शिनक में दिन में कर से जाय (१६)। अब ब्रह्म आयन बा शहर बादी वादिये शाहि। इलक ही मिर जान र उपायादर की एविंहात पूर्व बाल दील के राजिय हर दीरव की स्तर क्षेप्रया साम्रा राष्ट्रय अग्रह राग शरीर १६३ शदर शंच क शंगक्षण के ल राव व सेपा 'यहारा प्र'य हराह्य etra gen en fire in. of the same are not that the क्षेत्र के का का का जाता है। जा का का का का स्टब कर स्थाप काल्या संस्था क. न स्थापन a 185 675 to THE ST AT STATE

राह्म कर्माल हुन्य पर को भारत पर हैन हैंग विश्व तेन्द्रम क्रोपक, त्या नक पर देन हैंग यह ते लोग ताम्राकृत राहि की क्रिकेट बहुमें कर प्रताद से भी भी तेन्द्री हैंग

( १२० ) दुख पाये यिनहूँ कहूँ, गुन पावत है के।य। सह बेद बन्धन सुमन, तब गुन संयुत्त होय॥२१॥ जे चेतन ते पर्यो तर्ज , जाकी जासी मोह।

चुम्यक के पीछे लग्या , फिरत अचेतन लोह।।२२।। सरमुति के भंडार की, यही अपृश्य बात! ज्यों रात्चे लों लों गर्दे , पिन लर्जे परि जान॥२३॥ कहै यचन पलटे नहीं, जे सत पुरुष सधीर। कहत सबै हरिबन्द सुव , मर्यो नीच घर नीर ॥२५॥

मति फिरिजाय विविश्त में, राव रंक इक रीति। हम हरिन पांचे गये राम गैयाई सीत ॥ २४॥ पूअनीय गुन ते पुरुष वयस न पूजित द्वीय! यह तिलक किय कृष्ण के। हाडि यह सब कीय ॥२६॥

लेकन के अपयाद कें। इस करिये दिन रैन। रधुपति सीता परिहरी सुनतरककके वेन ॥२०॥ विपति परंद्व देइवा सत प्रत्यत का काम।

, अवग पिता दिय दशा श्रीह शाप संयो वर स्व : ३०॥

राज विनायन के दिया वसा विरियौ राम ॥२०॥ करिये सना सुहाधना, मुखत यचन प्रकाश। चिन समभे शिशुपाल का , वचनन भया धिनाशास्थ। अधुभ करन ही है। न शुभ , सज्जन यथन अनुप।

```
( १२१ )
```

```
पाठ ३४ -देगहे (विद्वारी की सतसई से )
                           विदारनहार = विनाश करने-
                                                       वाले
= क्रोडों
                             सरे=सिंद होता है,
= ऐारे
                                                 निकलता है
हिं = ऐंडी वैंदी
य = (दीघ") = यड़े
                               र्काचे = क्षे
                               नार्च = श्राष्टं वर काते हैं, नाच-
रात हुव = पुरी दशा में
                                                  कर रिकाते हैं
             रहकर
                                 राक् - यमब ह
वयदि (चड्र) = द्यांस
                                  भजन = र्वे व्यव हा नाम सेना,
रातार दे = साली बजाकर
                                                          নাগৰা
शगरता = चनुराई
                                    वरिया प्रवार
राहेते = र्रोधार
                                     मोर्च सीचा दर, बाद कर
 यमे = दहत
                                      वाष्ट्रव (वाषाक
  सहात == दरना है
                                       <sub>व्य</sub>ाध - सम्ह
  निक्ल क (निष्क र व ) =
                      e z esten
                                        41, 1417
    सर्देश == चण्ड्रमा
                                         21 21 FIG 710
                                          <sub>र</sub>्री <sub>ते</sub>. स्रादान न
    नीर = पानी
                                                                fer é
     जाय , देखा
     स्थित पानी
      सरोज = ना राव से प्रेंद्रा वस 🖰
                                           ezera - Eult'
                                            धार = द रहार
       स्तिधान्य - सूर्य
                                            ers a tite we
        विरद - बदाई
        टर्यात थाक्ट
```

कतक व्यस्तिना, धनुरा कोटि जतन कीऊ करें, परं न प्रकृतिर्दि शीव। नल बल जल ऊँचा घढे, श्रंत नीच की नीच !रा श्रोड़ि यहे न है सकें. लगि सतरीहें हैत। दीरघ होहि न नेकह, फारि निहार्र नैन ॥२॥ भीत! न नीत गलीत हैं, जो धरिये धन जीरि। खाये खरचे जी बचै, ती जोरिये करोरिशय धर धर डेंग्लत दीन हैं जन जन जीवत जाही दिये सोम चसमा चसनि , लघु पनि यहें। लखाई 🕬 बस्ये थुराई जास्यु सम नाही की सनमान। भना भने। कहि हो। डिये, साद ग्रह जा दान ॥ ४॥ मवै हैंसत करतार हे नागरता के मीब। गया गरब गुन के। सर्वे, यमें गैमेले गौयादी। क्रों ब्राई जी तजे से मन खरा सकात। ज्यों निकलक मयडू लखि गने लाग उत्तरात ॥अ॥ की कोंड सके बढ़ेत सा, लखे बड़ीया भूल। र्वान्डे दर्द गुलाब के इन इसरिन वे फूल ॥≕॥ नरको भारतल नीरको गति पर्कक्षरि जीय। जेता नाचा में चले तेता ऊँची द्वाय॥६॥ बदन बदन सर्पात समिल सन सरोज यदि जाय। घरत घरत फिर ना घर यह समृत कुँमिलाय।(oi कर ले भीच सर्राह के स्वयं रह गाँह मान। गंधी ' गंध गुलाब के। गंधा गाहक कीन ॥११॥

मार्कता = गरा

मांस = दाउकर

कर पुलेल की आचमन मीठा कहत सराहि। पगंधी! मतिश्रंध तु, श्रनरदिखायत काहि ॥१२०। थ्डें म हुते गुनन चिन, चिरद यहाई पाय। क्ट्न धत्रे सों कनक , गहनो गढ़यो न जाय॥१३॥ वते बाहु हां की करत हाधिन की स्वीपार। गेहि जानत या पुर यसत . धोवी धींड कुम्हार ॥ १४॥ संगिति सुमति न पायही, परं कुमति के धंध। राखदु मेलि कपूर में , हांग न द्वात सुगन्ध॥१४॥ कनक कनक ते सामुनी मादकता अधिकाय। वह खाये यारात है यह पाये वै।राय ॥१६॥ को ह्ट्या यहि जाल परि कत कुरङ्ग अकुलाय। ल्यों स्यों सुर्रामः भज्यां सहें . त्यां त्यां ब्रह्मत जाया १.५॥ कोऊ केरिक संग्रही कीऊ लाख हजार। मा सम्पति यद्पति सङा ।वपान विदारणहार॥१०॥ जेप माला द्वापा तिलक, त्या न एकी काम। मन कवि नावे बुधा सावे रावे राम गरिं। जगत जनाये। जिहिसकल साहिर जान्ये। नाहि। ज्यों भौखिन सब दाखये शाखिन देखी जाहि॥५०० भक्षन कहा। ताते भव्ये। सज्ये। न एकी यार, दूर भजन जाते कहा। सी तमख्ये गंचार (६) , यहि विरियो नहि और की नृ करिया उहि साधि। पाहन नाच चढाय चिन , श्रोन्हीं पार पयोधि ॥६२॥



(१२५)

≖धेना, छीन खेना इ≖सदुद्धीं दा पाटने∙

याला (राजा)

<sup>दिद</sup>=बुराई ु≈र्इस्तिवानाम

सर्गः = समार का रचने-काना ( ईरघर )

र्परद≕को सददिन न रहे

। इ≈स्तरी र्केड ⇔ देह

म्हाम = साथ रहना इराइ = महिमा

\* = \* 4 4 4 4

ये थाई है पहार पंत भरायकर का जाहि।।। मान सरिस भएगून हर तीरध सीर मन गृह सम

का संसुत संपत्नसम्बद्धः वृत्तस्य नाम् इदादार दाल्यका है वर्गाव छ। इस लेक कार्यका हरा

क्षेत्र जग में मन्ज र स्टार स्टब्स् स्टार जग में मन्ज र का क्रांत कार कारा है

मुद्रथ = पंडित धवतंस = भूपण ( शिरोमणि )

नमत = मुक्त जाती हैं स्याय = देख पड़े

वासान (वापाय) = पंचर

मदिरा = शराव इन्दर्भ = बहर्ती द्यप्रशय - वार्पी

सर्वम (सर्वम्य ) = सद वृष शोषन दशन वस है होते हैं

41 = 514

418 = + CE#

मरपति नसत् वृक्षत्त्र सं स्वल्यु वृत्स्याति पायः

चित्रसत्तम्त्रस्य । वर्षः स्थः । इत्रः प्रतः परः स्थःयः। ।। पापक पेटी राग भाग स्थलहें रतस्य नाहि

स्तृत्व सह चुन ह्यान उ



नहीं कोड रोग सम . सुन सम नहिं कोउ प्रीत। ग सरिस कें।ड यह नहीं , विद्या सम नहीं मीत ॥१७॥ ज्ञन सँग श्रनहित करें, ते हित करें निटान। से भृगु मार्यो चरण, हर धार्यो भगवान॥१८॥ क श्रतित्य संगी धरम प्रभु जग कत्तां सेाय। ..... तथा वर्ष रूछ गीन पात जो जानई तासी खोटन होय॥१६॥ स्य परितय जिहि मानुसम सय पर धन जिहि धृर । संग जीवन निज सम लखें स्ता पंडित भरपूर ॥२०॥ तियदि कंत पुत्रहि पिता शिष्यहि गुरू उनार। सामि सेवर्काह देवता यह धृति मत निर्धार ॥२१॥ करिये विद्यायन्त हो सेवन श्रुरु सहवासः। नासों ब्राविट श्रामन गुन श्रवगुन हाहि विनास ॥२२॥ यमी यात विगरे तुरत <sup>†</sup>वगरी वन न तात। क्षीच कलस फोरिय पटाव , पुन्त न तुरं काट भाति । २३॥ परिष्टन पासकुं ग्हत पे सगत सन्मत नाहि। जिमि प्रभाव जान नहां मीन गंगजल माहि २४। क्षाहुँ नमें नहिं मुर्खे जन नमत सुतुः। अयतसः। आमें डार फल सह नमन नमन न निष्फल देस रु प्राण ज्ञाय ते। ज्ञायप तहा उठ हट ज्ञाय जरी परी रसरी नटापे ozन प्रगट रखाय २६। कादें नेल पखान स्वा क्ल बन व साहि

ज्ञार में शहर करें पे खल में गुन नाहि निका



```
( .१२ ह )
```

धर्म विवार। विवायन्तीं चाहिये , पहिले वासो दोऊ लोक को , सधत गुद्ध व्यवद्यार ॥ ४०॥

## पाठ ३६—चिद्रस्नीति

सेनपाल = फ़ीज का सदीर ₹=देाप, बुराई स्वच्छ = देशपरहित, उत्तम

हृद्यभीर = जी का दृर्वाक ना=देखता है

श्रायुध का व्यवहार = इधियार लिस = धेष्ट चलाना <sup>इ</sup>ृम≂ चालुमी

भ्नारी = ग्रसावधान

महिपार - पृथिवी का मालिक.

मेर = मजा ष्यद् = मिथ्या

यधारध (यधार्य) = ठार र्ट्ड भागित्रीत = पृथिवी का

शिशासीन दिन ही सूपर मालिक (राजा)

1815

(व्समः तेद = धानस्द मे

ति = द्वापेक di = it

कावहूँ <sub>जा हा</sub>िच्याहरू है ।धम = नीच

सनाह (नरनाथ) = मनुष्य नहः ने निवः न का स्वामी (शजा)

बन है है। या राम्ब = हथियार a1113 1 3

विकास विकास स्पृष्ट = मुरचा वाधना सर्चन = सार्वानवार

दस्तः (दस्र) = चनुर ह्रद्युत = चाहता है



ड देन ≈ दमाइट

क्रमु≔ दीवन

रमन रामन = देरी का डोड़ने- 🛮 डसु (पर) = कीर्चि, दहाई भौति = ता

दरकर

सावधान निज राज में, हित अनहित पहिचात।

पर हिट्टाई दो सखत स्तो . नृष सचन दुधिमान दश अहस प्रमारी राग गति , नीति न देखत दीन।

उर सर असर विवेक नहि . अधन अवनिपति तान (२)

स्वामी हित रच्हा सहित . सायधान सब कात। राखें भज्ञ समाद सों, मंत्रिन को सिरवाज ॥३॥

दो लाइच मय भीर सड . स्वामी हितर्हि न चाह। स्तो मंत्रिन में अधम तेहि . नहिं राखें नरनाइ॥४॥

शुख्य शाख जाने सर्व . व्यृहादिक में इच्छा। स्वामी हित रच्छत सोर्र सेनगड है सक्द ॥४॥

हृदय भीरु जाने नहीं अधुध की स्ववहार।

सा सेनापति अधम तेहि , नहिं राखे महिपाल ॥६॥ धीर यती दुश्मन शमन मुरं सी शत्र हदर। तृत सम अनु बसु रतन सम. जो समुके सी सुर गंजा

समरसखसन्मखनिरखि. नकै भीति भरि कैन। सो कादर संसार में आदर योग्य महै न ॥=॥

परम चतुर बुधिमान चर, कई यधारथ ज्ञान। गिरधरदास पद्मानिये . दूत शिरोमनि तीन ॥६॥

भय खे। स्वामि सँदेश दो . कहि न सकै पर पास ! मपद हाहची दृत सो तिजये गिरधरदास ॥१०॥



it'en - enial

कास - व्यविष

रमण रामस कार्री। का जानन जन्म (सार) के बीति समृत्री

्यस् (सरा) के कीरिय साहाई - वीर्तन - एक

काला

सायधान निक राज में दिन शमदिन परिधान।

या दिए हैं भी सम्बन्धा स्थापन स्थापन प्रदेशन ।

चारास प्रमादी गागगात नी ते न देखत जान। उपस्था सन्दर्भयम् नीहः चायम स्थानपति ते।न।-।

स्यामा (हल १५२) साहत स्वापात स्व प्राप्त राह्य प्रक्त स्वर्थाः स्व मायत्व (स्वर्वाङ ६

हा त्यारक संय भाग भाग भाग हिलाह संचाह संभावन संभावन भाग भाग प्रारंडिक संग्रह है स्थान प्रारंडिक संग्रह है स्थान हिल्हा है जोगा भाग भाग है है कि स्थाह त य भाग तेल संग्रह है कि स्थाह संभाव ति संभाव है है से साहबात

पार प्रसंद्रास्त कर राज्य के कार्युष तर्मका क्षेत्र राज्य का समित से सूक्ष है स्वस्त सम्बद्धार राज्य का कि राज्य का सहित प्रकृत कर्म का कि राज्य का सहित प्रकृत स्वस्त का स्वस का स्वस्त का स्वस का स्वस

लास्य रुप संस्तृत झे केहन लक्ष प्रयास इत्या लालचे दूर सा तक्षियं गरलदास र











पृक्षे काम सक्तर मित् दुर्त । जनु पर्याष्ट्रत भगर पुर्देत ।
उदित भगन्त परंग जरुरोखा । जिमि लेगित पार्व परंगाण ॥
सरिता सर निर्मेश कर से।ए। । सन्त दृद्दय जस गत मद मोदा ॥
रम रस स्वा मदित सरपानी । ममता त्यागकार्यं जिमि सानी ॥
जानि शरद प्रानु खजन भागे । पाय समय जिमि सुएत सुदाये ॥
पंक न रेखु मोद्द भस धरनी । नीति नियुण मुवकी जस करनी ॥
जह संकोच विकलमय मीना । विविध कुटुर्ग्यो जनु धनरीना ॥
विन धन निर्मेश सोद शकाशा । जिमिहरिजनपरिहरिसय शामा।
कुटुं कुटुं गृष्टि शारदी धोरी । कोड एक पाय भक्ति जिमि मारी॥
दोहा-मले हरिय तजि नगर नृष. तायस यिएक भिखारि ।

जिमि हरिमिनिहि पार जन. तजिंदे साधमी चारि ॥
मुखी मीन जहें नीर स्रमाधा । जिमि हरि शरण न पक्षी पाथा ॥
फुले कमल खेद सर केंसे । निर्मुन ग्रहा समुन भये जैसे ॥
मुखत मधुकर निशर स्रमुण । सुन्दर खग रच नाना कर ॥
चम्रायाक मन हुख निशि पेखी । जिमि हुजन पर संचित देखी ॥
चानक रटत लुग श्रति स्रोही । जिमि खुख लहें न शंकर हो हो ॥
शरहतापनिशि शशिश्रवहर्ष । सन्त दरश जिमि पातक टरहं ॥
देखीई विधु चक्षार समुदाई । चितवाई जिमिहरिजनहरिपाई ॥
मशक दंश थीने हिम्मासा । जिमि हिम होद किये कुलनाशा॥
दोहा—भृमि जीव संकुल रहे. गये शरद भ्रातु पाय ।

सतगुरु मिले ते जाहि जिमि, संशय ग्रम समुदाय ॥



तनपा = कन्या, बेटी घरोकिक = लोक से विरुद्ध, धनोसी

पुनीत = पवित्र षोभा = विक्ल हुन्ना विधाता = महा लहाँहैं = पाते हैं दीदि ( दप्टि ) = निगाह भइन = भैंगता, भिखारी सकरन्द्र = फूल का रस सथुद = सथु पीनेवारा भीरा मनर्चाता ≈ सन के चाहे हुए হাবে≆ ≃ থঘা नित्र इतेत = सपेड भ्रेन (भ्रेट) - बान নিভি - জলানা पविद्यप्ति = त्यारा द निसेप पण्डकाणाव शांक ≈ चन्द्रमः भेजी - भोला भाजा ल्यानेयन ≈ कुल बरह = बर देनव′े (२ दे **पर** = तह धः. ) बि न्हार्य = पाष कार्य दन्हा (वाचि ≈ हप q= (ঘত) = দৰিল

गहरु = देर, बिटम्ब समीता = उर कर गृह गिरा = गुप्त बात सिस = बहाना बहोरि २ = बार बार गिरि-गाब-कियोरी = पहाड़ों के रावा (हिमाल्य) की

तव = तेरा धादि = ग्रुरू सध्य धीव धवसाना = धन्न धामित = धनुन्तित, बहुत अभाव = गेरावस्य ० च चारा = धमें इसी, कास

स्तानं भाष्यहरू व्यादा पनि = व्यादेशकाला विद्यार विद्यार देखा के बरा विद्यार विद्यार

विनय = नक्षयः विदेश = जित्तः ( जनक जिनकः सुख दुख का भ्रम्भव न धाः) को ज्वहंका जानकः सभी भाग = भागा सम्बद्ध दक्षा

विष्ट ८०







## ( १४३ )

पाठ ३६—सीताजी का स्वयंवर (रामायरा से)

स्त्रपंदर=वह विवाह जिसमें

कन्या दर के। पनंद कर सेनी है। यह विवाह केवल समर = लड़ाई

गताधीं में दचलित था।

भारत = पात्र

वर 🗕 धेष्ट भवन्ताना – वह स्थान बहा यहा ऋष्यता = प्री

रचा राषा या

बरद बुद्द ट्रे

प्रसि=वृत्र-क्षित्रे हेड्या । प्राप्त किर्दे

धाल धान्हाकि । हाला के अभिन्य र । पत्र । ६१ मा र

sa sree

TTT = F6.

Tent = 45 7 15

PER THE PART OF STREET

an \_ 27'71 क्षीकार = १ वरा

ग्वट् = व्यं - ५

F- 7 = 15 चेदेसम् १ च्या १ स्ट्रास्ट

सदर ल र्<sup>यार १</sup>००

धन्ध = विचार-रहित द्यवगाहा = होना

मदेश (स्वदेश) = चपनी २ जगह, घरना टार

दृश्द्रभी = नदारा

क्षंत्रक = भीवद्या, धरदद्याय

वर्कन = घरहा दर

बरबाह = नश्पनि, राज्य ~्हि सहहोदर

a : .

. / F=40.4 ---

. १ । वर्गमा द्वामय स ्त द्वाया दक्ष

२०१ दसप .. = 34 7 47

- " = 5"5"

ं संस्कृत संस्

77 E7 = E #7























धर्मशील = धर्माका रमा = गृथिची

रमात्रह = पासाल हैं: सीने वेहि लगि = जिसके लिए

धानन ⇔ यन, खहार

धमरपुर = देवताको बा नगर

(स्वर्ग)

श्राप्तासः \_ धाः विषयम = भ्रेगा-विरास

संक्षि - जालवी

र्क्लार ⇒ बज निर्दाप निराहर करके

र्धास्य हड्डा

वप = = प धर

भव = ३ पर

वावर - नाव त्रका प्र

प्रजः पच – प्रजः ल न

सा०-भरत कमल कर जारि धम धरन्धर धीर धरि ।

माहि उपदेश दोस्ह गुर नीका । प्रजा सचिव सम्मतसवहीका॥

मातुउचित पुनिश्रायसुदीन्हा । श्रवशिसीसधरित्राहियकीन्हा॥ ग्रापतुमान्स्वामिहित बानी । सुनिमनमुदिनकरियमलजानी॥ उचितिकश्चमुचितिकयेविचारः। धर्म जार सिर पातक भारु ॥

समेन = सूख से

संयोगवर = चंत्रस्य, जह

चारणी = शहिरा

दपचार = इलाज

विरक्षि = प्रजा

टाह = टाभ

चदिन पुरे दिन, कमकार्ता मुहि (सुष्टु) = श्रस्तन्त श्रव्हा

घ्रष्टांत = पीडित, प्रशास्था

सरञ्चित – सीधा स्वभाव हर्जा - सेर

वाच - ग्राथम नीच दवारि (कासाझि सन की

धाग अस्त सदस = घा

धारि≂ शत

वास -- विराह

यचन आंमय जन् वारि देन उचित उत्तर सर्याह ॥











वर्ग "दीनद्याल" पार पुनि भेटन है।ई। अपनी अपनी शेल पधी केंट्रें सप फार्र ॥ऽ॥ प्राहें प्रयत समाध जल यामें तीदन धार। पर्या पार जा नृ चहे खेवनहार पुकार॥ खेवनहार पुकार वार नहिं काऊ साधी। श्चार न चर्ते उपाय ताव यिन परी पायी॥ चरने "दीनद्याट" नहीं अप पूर्ड पाई। रदे महा मुख वाय प्रसन की भारी आहें ॥=॥ चारों दिशि सुभें नहीं यह नद धार श्रपार। नाव जर्जरी भार यह खेवन हार गंवार॥ खेवन हार गैवार ताहि पर है मतवारो। लिये भीर में जाय जहां जलजंतु अखारी॥ चरने "दीनदयाल" पथी ! यह पीन प्रचारी । पाहि पाहि रघुवीर नामधरिधीर उचारो ॥६॥ हारे भूली गेंल में गे शति पांप पिराय। सने। पर्धा अब ते। रही थीरी सी दिन आया। थोरो से दिन आय रहे हैं संगन साथी। या चन है चहुँ होर भीर मतवारे हाथी॥ वरने 'दीनद्याल' श्राम सामीप तिहारे। सूचे पथ की जादु भूति भरमी किन प्यारे॥१०॥

पाठ ४४—प्रिश्च प्रतापनारायण् कृत ( प्रेमपुरपायकी से ) प्राप्तागत = शाय में शाया हुमा करणा = दया पाल = पाठनेपाता विस्तारी ( विन्तरी ) है = फेराई हितकारी च कित कानेपाला है प्रतिपाल करना = पाठना पुदियार = पुदिमान





पा(भगा) = द्य शांतिविदेतन क्रशांति के घर पारी = संपार है माधा = स्टार रान = निषड, निहा भूतम = हिरामा है াহিব 🗕 মাধ্য विस्ता सं गुल मोरी = मेरच दत्र ⇔ दीवा स रीव्द हुना थे। इंदर (KHZ) सेक्टी के ब्री भावना 🖚 विस्ता वार क रहारा ERI 4\*15 airi - feery, erd रणासन पाल कृपाल प्रभा हमका एक ब्राज सुम्हारी है। कर सम दूसर दीर काऊ नॉर दोनन का हिनकारी है। ि। नन सदा सब बीयन का चानिही करणा विसनारी है। नेपाल कर पनहा पदल असकीन वितासन्तारी है। व नः । दयः वार दालन हा पूर्वः कान विद्यासमसाधि है। सराय तान सम्ब भारत हा ग्राम केल निदान ग्रामारी है। 'वा'र 'तन बार स्वसद् हा श्वानका तथ हार्गत प्यासी है। 🖘 है। १७ है सम्बद्धां का तथ बम संया ग्राधिकारी है। व =\*\*\* समय सरायक हा तथ द्यासन दृष्टि रमारी है। रर नामनर यन । जर नहरूर पह प्रसार विदेशहरी है : १।) न अन्तर्भन वर व्याप्त संख्या नवता यह साथ हमार ही। नवं वर्तमे र घरार सरा जनकः सुमरी रखनारेही। लगार कर रागर बार कर फालाग करतार बर पार्ट ही। भ र र २ र २ वर्ष १ चार रहार सा इ सर्वेश वसारे ही है वित्त के कर यन बर उपन्नारम्भ भ्राविसम्बद्धी। er er ern eine eine fan gunt fil र है र रचनम उन्नाम व वर्षात्र के प्रक्रियार ही।

र्षेह् जीवन के तुम जीवन हो, इन प्रानन के तुम प्यारे हो। तुमसोपमु पाय "प्रताप" हरी, केहि के अब श्रीर सहारे हो ॥२॥

साधो महुका क्षत्रप दिवाना । मापा मोह जनम के टीरीया तिनके रूप

भाग माह जनम के शाया तिनक के लुमाना।
इट परंच करत जग धुनत, दुख को छुछ करि माना।
किकिर तहां की तनक नहीं है. जेत समय उहें जाना।
मुख ते घरम घरम गीहरायत, करम करत मन माना।
जो साहेय घर घर की जाने तेहि ते करत घहाना।
हेहि ते पूल्त मारग घर की, आपहि जोन मुलाना।
हियां कहां सज्जन कर यासा, हाय न हतने जाना।
यहि मनुजा के पांडे चलि के, सुख का कहीं डिकाना।
जी "परताप" सखर की चीन्हे, सोहं परम सयाना।।।।

जागो भाई जागो राति अव धारी।

काल चोर निर्दे करन चहुत हैं, जीवन धन की चोरी। क्षीसर चूके पुनि पिट्टिंडी, एम्प मीजि सिर कीरी। टाम करी निर्दे काम न पेंडें. यातें कोरी कोरी। कोरी कोरी। जो कलु वीती वीति चुकी सी. चिता ते मुख मेरी। आमे उम्में वर्ष सी की की कि तन मन इक टोरी। कोऊ काह को निर्दे साथी. मानु पिता सुत गोरी। अपने करम आपने सेती. क्षीर माचना मेरी। स्व सहायक स्वामि सुखर से. सेंड्र भीति जिय डोरी। नाहिं सु किर "मताय" हरि कोऊ यात न पृद्दिह तोरी 1211

षाठ ४४—धोमतो राञ्चराञ्चेश्वरी विक्टोरिया की स्तुति ( निध स्तादनारादर हत)

दीसत ≔देख पदता हैं नेदन = इन्द्र का पाग्, लंदन नगर



